॥श्रीकृष्णायनमः॥श्रीगोपीजनवल्लभायनमः

अथभ्रमरगीतकेपदश्रीसूरदासजीकृतलिख्यते॥

जबयावेदकाननेवैराग्यसिद्धभयोसंसारदपास॥
क्तिभगवत्सेवाकथामिलिनेमेयाकोआसक्तिहो
यतबयाकूंफलकोदानविचारे॥तबयाकूंविप्र
योगकोदानकरो॥तातेंविप्रयोगभयेपाछेंयाकूंतौ
न्योगसहितलीलाकोअनुभवहोय॥भूतभावि
ष्यवर्तमान॥जोलीलाकरीहैऔरअबकरेंहैं
औरआगेंकरेंगे॥सोतोन्योनकोएककालाव
छिन्नयाकोअनुभवहोयपाछेंलीयेंयेभ्रमर
गीतकेपदलिखतहैं॥जोइनकोंबांचेंसुनेति॥
नकोंयाविप्रयोगकीसिद्धिहोय॥दोहा॥जे
यवधीरननहीयेंनउपजेप्रेम॥तोलोंकामन
हीजपतपतीरथनेम॥१॥विरहपंथमेंपगध
रमतिकरोउदास॥कोचेचरासनबासहैभूं
लेयसुवास॥२॥जोतेंविरहावसततहेलालन
ना हिंनेमास॥३॥जोतेंनैनमेंएकलोहाडचाम
स॥४॥नेहनगरमेंप्रेमफरविरहकोटिक
ऐसोरठोरनाहियाइहियेन्योफलहीनीमांझ॥
हनगरमेंप्रेमफलअक्लसिरकेपास॥इरपा
केफूलकतनहीविरहानलकेत्रास॥५॥रूपसवि

॥

(अंकुत)

प्र.१०. नविधुरनबाहोनविरहवढोननवेलि ॥ उमसो ॥
॥ प्रेमसमुद्रज्योंझीयोनगरसरेलि ॥ ६ ॥ धिनुबादे
छिनुऊतरेसोनहीप्रेमीहोय ॥ निसवासरमोज्यो
रहेप्रेमीकहियेसोय ॥ ७ ॥ चाहकोचाहेप्रेमरसता
ब्योचासौमस ॥ ताकीहेनोचूपरीज्योकरिमिलेजग
डीस ॥ ८ ॥ रागसोरठि ॥ जमसुलबारबारघोभावे ॥
हकोऊएसोहिन्तूहमारोचलतगोपालेरावे ॥ १ ॥ बे
हो ह्योयहगोधनहगोकसान्नपनिमोकोंबंदूमेंमे
लो ॥ येरसमेरेप्राणजीवनन्पाविनन्ञागेबेलो
॥ कहाकामसमेरेधगानमगनकोन्यपमधुपुरानु
लाये ॥ सुफलकसुतमेरेयनेहरनन्मोफालतप
ाये ॥ २ ॥ बासरबदनविलोकिजीऊंकर्मभेस
मैसुनिजुंपेकमेंजाऊं ॥ तिहिविधुरतनेसौडु
ंवसताहसिफाहितुलाऊं ॥ ३ ॥ गिरिगिरिपरत
लधरनीतबदनकमलकुंमिलानी ॥ कहाकहेव
हेसूरदासप्रतिदुखितनकीरानी ॥ ४ ॥ सोहा ॥ मैनि
दासहूंमिलेगिरिहूंरससंग ॥ सबनहीनसु
हूध्यानकरेंहृपरापन ॥ ६ ॥ जिनकेतनवि
आस्याजिनसुमरोरे ॥ रारकेप्रभुनेचरननते
रसवणाहींनकोघेर ॥ ७ ॥ ८ ॥ रागमलार ॥ नंदुपति
सघाऊधोजाब ॥ न ॥ नेगेमननमनयहसोचनभली
नहीपवन ॥ १ ॥ संगसमुजधरहींलठाडेनिठुरमेसें ॥

फार ॥ स्योगयनहिबननतनीकौहोतजेसेंमार ॥ २ ॥ जो
कहूंतीफेरेकाहींनिरहेहयहमोहि ॥ ३ ॥ देखवेमेंपरमसुं
दररहतनेंननजोय ॥ ३ ॥ ४ ॥ गगफलसजेसेंपपावन
सोईयाकोमृपसुरकेसेप्रेमपावेविनाहृदयसवलु
पा ॥ ४ ॥ ५ ॥ रागनट ॥ नंदपतिजानेकृधोरीति ॥ य
हप्रीतनिजमघाकीहियतनकरतभावप्रनीति ॥ १ ॥
विरहदुसहैनाहिउपजतकोंनविधतहांप्रेम ॥
पपीहेबरनजाकेभेधस्योइननेम ॥ २ ॥ त्रिगुन
तननपियतन्हमकोप्रसमानतन्फेर ॥ बिना
पीयाहोमउधरेयहकरतमनकेर ॥ ३ ॥ याहि
कहिमंत्रेकहियेबचोचेलेमसार ॥ कछू
मगाहितप्रतिहींभस्योस्पहूंकार ॥ ४ ॥ प्रेमभज
कृपाकेजाहिकोंममकुराय ॥ सूरप्रभुमनय
पूंजहिरहूपकाइ ॥ ५ ॥ २ ॥ रागनट ॥ यहउ
सोरंग महमिलिएकसाथबेठतचलत
संग ॥ १ ॥ जातकहूंतनबनेयासोंनिठु
प्रेमसुनिविपरीतभाषतहोतहैरस
पूंनकोधानमेरेरसरंगतरंग ॥ २ ॥ सूर
स हींजससोंमिल्योरैवामिलेंहंग ॥ ३ ॥ ४ ॥ ध
मिलिकहेंकमसोंभात ॥ यहतोकहे
जोमेरसजरजात ॥ १ ॥ कहूंनकहे

षे· ॥ के पुरुषन्नारि कहि तात ॥ कहा नंद बाबा से मो सों कहु
॥ जैसो धामात ॥२॥ कहा भ्रम भाव ने सुतो संग के सुषवह
बभ्रम वह रात ॥ मरवीस बाहू न ही संग मे नहीं वेकुंठसु
हात ॥३॥ वे वालें कहिये कहे टपागे यह सुन हारि पछतात
सूरदास प्रभू यह सगिहि माकों कहि लालि चरनं वल न्यान ॥
४ ॥५॥ राग धन्याश्री ॥ कहा सुरकमजे को सो संसार ॥ क
हां सुष दरवे सो वट जमुना यह मन ससं वि चार ॥१॥ क
...न ने धाम कहां व्याधा संग कहां वेस न यं ज धाम ॥ कहा
...सवीच प्रलर सुषनागर नं न तम ॥२॥ कहा
...कतरु पति पू जे न कुंज कुंजेव न धाम ॥ कहा
...द्रवि न गोपि न संग सूर स्याम ने फाम ॥३॥६
...श्री सषा हम कों मिले ऊधो वचन परत नाल
...गनि जमुन के प्रगट करि हों कासों बात ॥
...ग विना नहीं सुष कहां प्रेम टपरु जो गमे ग
...ध्ये हें रषो कहां प्रेम त्पारु जो ग ॥ ॥ कान्ह
...सो कहा दुष दुष कहां ... ॥ ...न ॥८
...ही सुबुवें ... प्रीति करे ... ॥ सूरप्रज
...फ सो यह हे भ ॥३॥७॥ राग कान्हरो ॥ हंस
...यो ॥ कहा गो कुल कहां गोप गोपि
...गरह्यो ॥१॥ जैसें कंचन ने काच संग मो
...य ॥ जैसे रवि डिक...रस्म यहे भर यो ॥२॥

संघ ॥२॥ जल बिन मोर हित नारी बिन ऐसें रीति च
लावत ॥ जब प्रेम की बातें रहि ये तेहे तव हो यह डवि
रावत ॥३॥ याकें ज्ञानी पापत्र जपठये ओर न कछु
उपाय ॥ सुनो सूर याकें दुह्यो पठये भले वने देऊ रा
ऊ ॥४॥८॥ राग धनाश्री ॥ या बिन ओर न कछु उपाइ
मेरो पर र कहो गुवरिहे ब्रज कों देहु पठाइ ॥१॥ गुप्त
प्रीति गोपिन की कहि के याकों करो सहेत ॥ गोपिन
के घर सों जन फार न जेहे तुरत सुनें न ॥२॥ प्रीति प्र
तिकन करे गोप मन में जोगिन की यह भांति ॥ सुनो
सूर मन में निश्चे करि वे विरहे ए कांति ॥३॥९॥ राग ध
नाश्री ॥ जब ही या हि कहि हैं जाइ ॥ मोहि पठवत गोपि
कन पे हरषि हो य सिहाइ ॥१॥ जोग केरु प्रीति मान न करि
यह प्रनहि जेहे धाय ॥ कहे गो मोहि स्याम सों नत करी
यह वनुराय ॥ ऐसा कहि गये ताहि समे ऊधो सषा कहि
लीये बोल ॥ कंधधर भुज भये ठाडे करें व चनन बोल
ऊ ॥ बार बार उसास डारत कहत ने ... की बात ॥ सूर प
भु कें वचन सुनि सुनि उपंगसुत मुसिक्यात ॥४॥ १०
राग धनाश्री ॥ हरि गोकुल की बात चलाई ॥ सुनि उपे
गसुत मोहि न बिसरे ॥ ब्रजजन प्रीति सुषदाई ॥ य
ह चित हो ते जाकुं में अब ही इहां न ही मन लागत ॥ गो
पी ग्वाल गाय बन चारन अति दुख पायो त्यागत

श्र॰ ॥ ५ ॥ कहा माषन रोटी कहां जसुमति मे मैं गहि गहि भ्र-
म ॥ सूरस्याम के वचन सुनत लवचा पत उपज्यो ने-
म ॥ २ ॥ २१ ॥ रागरामकली ॥ नंदनृपति ले रह्यो तहां सुवपो-
त ॥ केहि लसों मन रह्यो जो ईसो ई भई यह बात ॥ १ ॥
वचन माग रक्षे रन कारन प्रेम कथा चलाय ॥ सु-
नो ऊधो मो हि ब्रजकी सुरत नहि बिसराय ॥ २ ॥ रेनि
सोवत नहि चन सजल नाहि नैन उपान ॥ नंद जसुम-
ति नार नर ब्रज तहां मेरो ध्यान ॥ २ ॥ कहत हरि सुनि
उपंगसुत यह कहत हें रसरीति ॥ सूर चित तें टरत
नाहीन श्रीराधिका की प्रीति ॥ ३ ॥ २२ ॥ रागमलार ॥ स-
खा सुनि एक मेरी बात ॥ बहुलता यह गोपिकन सं-
ग सुधि करत पछतात ॥ १ ॥ विधि लिखत नहीं टरत
क्यों हूं जीय रहत अकुलात ॥ हंसि उपंगसुत वचन
बोले कहा हरि बिलखात ॥ २ ॥ सहि हित सुरत
ही सकल मिथ्या जात ॥ सूर प्रभु यह सुनो मोसो
वात कहीं कछू ना जात ॥ ३ ॥ २३ ॥ रागरामकली ॥ न-
वउधव यह बात सुनी ॥ तब नंदपति अति हि सुख
पायो मानी गरस ही ॥ १ ॥ श्रीमुख कहा ज्ञान जू ऊतु-
म ब्रजको सिधयो जाय ब्रज लोग ॥ मेरो विरहे विरही
ब्रजवाला जाय सुनावो जोग ॥ २ ॥ प्रेम मिट यहा-
न परमोधो तुम हो पूरन ज्ञानी ॥ सूर उपंगसुत म- २

न मेरे हस्यो यह मन हि मांह हरि जानी ॥ ३ ॥ २४ ॥ रागगौरी ॥ ऊ-
धो तुम यह निश्चे जानहु ॥ मन वच क्रम मैं तुम्हें पठा-
वत ब्रजको तुरत पलानहु ॥ १ ॥ पूरन ब्रह्म सकल अवि-
नासी ताके हो तुम ज्ञाता ॥ रेष न रूप जाति कुल ना-
ही जाके नहीं पितु माता ॥ २ ॥ यह मति दे गोपिन को
आवो बिरह नदी में भासत ॥ सूर तुरत तुम जाय
कहो तुम ब्रह्म बिना नहीं आसत ॥ ३ ॥ २५ ॥ रा-
ग[illegible] ॥ ऊधो मन अभिमान बढ़ायो ॥ जदुप-
ति जोग जान जीय सांचो नैनि श्रम सचहायो ॥ १ ॥
नारिन पे मो कों पठवत हे कहत सिषावन जोग ॥
मन ही मन यह करत प्रसंसा मिथ्या सब जग भो-
ग ॥ २ ॥ आयुस मान लियो सिर अपुने प्रभु आग्या सि-
रमान ॥ सूरदास गोकुल न पठवत मैं कर-
पसयान ॥ ३ ॥ २६ ॥ रागकान्हरो ॥ तुम पठवत गोकुल
को जे हो ॥ जो वे मानि हैं ब्रह्म की बातें तोउ नसों में
कहिहो ॥ १ ॥ गदगद वचन कहत पर फूलत नै-
र वार समुझे हो ॥ आज नहीं जो करत का नहो को
न काज फिर ऐहो ॥ २ ॥ यह संसार मिथ्या है सं-
हीय कहि कहि फुनि ऐहो ॥ सूर दिनाई ब्रज मेरी है वे
आप घरत पुनि गहिहो ॥ ३ ॥ २७ ॥ रागधनाश्री ॥ ऊधो
ब्रजमें गमन कहे ॥ मेरे विरह भरी ब्रजवाला नि-

नकौ हुसहरै ॥ २ ॥ जोगज्ञान परम धो सबकै जो सु
नपावै नाहि ॥ सूर नंद सुत परमोध ऊधि विमलि मो
हि हि बिसारे डारि ॥ २ ॥ सखा प्रवीन हे मारे हो तुम तुम
से मन नहे मह्नत ॥ सूर स्याम यह कारन पठवत है ऊधा
वैगे मत ॥ २ ॥ राग विहागरो ॥ ऊधो वेग हो ब्रज जा
उ ॥ सुरत सदेस सुनाय मेटत लफलन का हु ॥ १ ॥
काम पावक तूल मय तन भस्म न होन पावै नोच
नके नीर ॥ अपा जलों यह भांति मिलि है ककु धुकु कु
शल सरीर ॥ १ ॥ समाधान करे विना तिय कौ धरे त
न धीर ॥ भारं भारक हौ कहा सुनि सखा साधु प्रवी
न ॥ सूर सुमति विचारे कीजिये जल विन मीन
३ ॥ १९ ॥ राग विहा ॥ सुनि सखा हित मलामेरे नाहि
न समुझ तोरहै ॥ कैसे हु कहि परितिन कौ जो सेवौं बहु
सु मोहि ॥ १ ॥ रैन दिन मम मति उन कै बपु कहा
न पान ॥ उन विन सब सुमो हि दुपर्यौ तन मन
प्रान ॥ २ ॥ स्याज मेरा स्तन दीने [illegible] थाने कुमार ॥
मालो पल सामीप काम स्नप [illegible] जे पार ॥ ३ ॥
एक रही सापु [illegible] सिद्धि व हौ बिन जाने ॥ सोई
तुम उपरे सी याज हिलहे परनि बोन ॥ ४ ॥ जो नहीं
रूप गोकुल ते कीरे लोहि हो रहो रिन दास ॥ सूर गोपाल
तय हो बोहोर बोहोर ब्रजमा [illegible] स ॥ ५ ॥ २० ॥ विहाग

४

तुम ब्रज जाउ उपंगसुत रेख अनु ॥ स्याम विपुरत सवर है
स्याको एक सै प्रहेक मनु ॥ १ ॥ नवनेम धुवन कौ हेपाये है
रूपको नहीं कोय ॥ सुवति तिनपै नाहि नको उमे जो तुम
समझाय रन कोय ॥ २ ॥ एक प्रवीन रवोर सखा है मारे सो
नी तुम सम रकोय ॥ सोई कीजिये जे सब ब्रज ना साधु
न मीसे कोन ॥ ३ ॥ सौ सुख कहत स्याम यह रानी ऊधो
सुनत सिहात ॥ प्या युस मान सुख सम मूजे हैं नाहिं मा
सिर्हे धान ॥ ४ ॥ २१ ॥ राग विहाग ॥ ऊधो ब्रज नजिन गह
[illegible] ॥ तुम ब्रज नारि जानि मति समुचो कहियो
जोग सुनावो ॥ १ ॥ वा नो कहत समरु वे ले हे कहमा
[illegible] ॥ विरह दाउ यह सुनले वूझि है म कोउ पनि त
लौं पानौं ॥ २ ॥ अबहीं जाउ विकल सब गोपी नो
[illegible] चन कहियो बो ॥ सूर नंद वा राज सुमवि को बि
गिरा उपसतो सो ॥ ३ ॥ २२ ॥ राग केदारो ॥ ऊधौ जि
न लावहु गोकुल जाइ ॥ तुम ही बिना हम रहे है या
[illegible] श्री नंद पलि कीरे चतुराई ॥ १ ॥ [illegible] कीन्हो रा
ध [illegible] या दीयो लुरंन पलनाई ॥ अपने आप
नै करकर दाप सुन देये पट [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] सुक
र पीतांबर [illegible] सब सुख सुखदई [illegible] स्याम
नंदसुत उपंग सुत [illegible] पठाई ॥ ३ ॥ २३ ॥ राग
विहागरो ॥ स्याम कर पत्री लिखी बनाय ॥ नं

श्री ॥ हरी आवत कौं चितै नैन कोर करहे घोर मसोसा हाय ॥ १ ॥
॥ गोपिन कों वलि लिखि जोग पठायो भाव नेम न्यो जा
य ॥ सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम हि लेत ढ़ढा
ई ॥ २ ॥ २४ ॥ राग विहाग ॥ ऊधो गए सुत लेहि याहि ईहरि पा
ति ॥ यह कहियो जसुमति मैया सों नहीं विसरत दि
न राति ॥ १ ॥ कहत नंद वहू वसुदेव देवकी सुम कों हू
मही जारत ॥ कंस त्रास निपट प्रति ही मा के मज में रा
खि छुराये ॥ २ ॥ कहेव नाथ कौं दुख वहु तातें कहि वलि
राम कन्हाई ॥ सूर काज करि के कछु थोरें वहु मिले
गे आई ॥ ३ ॥ २५ ॥ राग मलार ॥ ऊधो वलसों कहियो
जाइ ॥ हम आवेंगे दौरे आई मैया जिन अकुलाइ
१ ॥ या को मिलन वो होत हम मन म्यो गेय कहि
रुधो धाइ ॥ वहु गुन हम जो कैसें विसरे लै कें
पय प्याइ ॥ २ ॥ और जब मिलयो नंद सखनि सों व
कहियो समुझाइ ॥ तो लों दुखी होन नहि पावै धो
री धूमर गाइ ॥ ३ ॥ कोऊ पालक हि हाँ सों भाषत त
ध पिर हि होय न जाइ ॥ सूरदास देखो जव जा मिन त
व यह देयो सिराइ ॥ ४ ॥ २६ ॥ राग आसावरी ॥ मेरो पा
लैं मोहन दनी कों मिलि कुवजा लाल कहिहौ ॥ याको
नंद हित लालन कहि पुनि पुनि चरन गहि हौ ॥ १ ॥
आदिन ते मधुवन हम कहत सुधि न ला हि नतु सखी

की ॥ १ ॥ देहु सो हम कहौगे हित करि कहा निठुरता कीनी
२ ॥ यह कहियो बलराम स्याम हम पठये हो दुःख भाई ॥ सूर
कथे कौरे वोगि देन हि यह कहियो जदुराई ॥ ३ ॥ २७ ॥ रा
ग केदारो ॥ विधुनाथ यह लिख्यो सजोग ॥ कहा मधु
रो पायवे हे नज्यो माखन को भोग ॥ १ ॥ कहा मजेप
सखन सों संग जहा हम धुरा खेले लोग ॥ देवकी वसुदे
व सुत सुमिरन न कहिए हे छौ मे ॥ २ ॥ रोहणी मात ना अ
सावक हित छगले नीगेह ॥ सूर श्री मुख वचन येक
लिखि लिखि पठायो जोग ॥ ३ ॥ २८ ॥ राग विहाग ॥ ऊधो
जातेव्रज नेही सुने ॥ देवकी अरु वसुदेव सुनि के हदें
हेतु सुने ॥ १ ॥ एक पहुसौं पाती लिखि दियो पा कहो जसुमति
नंद ॥ सुत हमारे पालत हो नेअवलि हृदयो आनंद ॥ २ ॥
गायक रमिलि मिलि जात कवहू न स्याम अरु वलिराम
यह कहियो पवथ रेहन वहि लन विश्राम ॥ ३ ॥ पास
सुख सवलु महरी जोग हमें मिले कुमार ॥ सूर पहु
पकार तुम तें कहें वारंवार ॥ ४ ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ पा
ती लिखि ऊधव कर दीनी ॥ नंद जसोमति हे हित
कहि हीनों हंस उपंगसुत लीनी ॥ १ ॥ मुख देहे व
न कहिहै नेना ईपे तुम हो हित हमारे ॥ पाल
कहि पठवे नपाडर ने तुम हो पालनहारे ॥ २ ॥ कु
वजा सुन्यो आत मजडुंधो महल न सोधो बुलाय

आपुनि पाती लिखि सौं राधा कूं गोपिन सहित पठाई ॥१॥
मोकौं तुम अपराध लगावत मैं पाई नई अनयास ॥ तु
म नक ह्यौ मोपे व्रजनारी सुवहीन सूरजदास ॥ ध ॥ ३०
राग मलार ॥ हम घर काहू के न गननारी ॥ साजे
भाग नहीं काहू कौ हम मुख पाइ पनिवारी ॥ १ ॥ कुच ॥
जा लिख्यो सैंदेसो सब कौं और करी मनुहारी ॥ हे
तो दासी कंसराय की दैखो हृदय बिचारी ॥ २ ॥ फल
न में ध्यान लो कछु एक दै तरी लेउ धार करउ जुमारी ॥ जब
हुपारी चलुरके पाले राजत राग दुलारी ॥ ३ ॥ तब टे
हो सबको ज्ञान तेपरस न भई सिध कारी ॥ सूर
दास प्रभु लगन प के भाव अपुने हाथस कारी ॥ ध ॥ ३
राग गोरी ॥ ऊधो व्रज ही जाय पाय लागो ॥ परस
नौ राधा जू कौं हीनें ये रस तुम सौं माजो ॥ कान्ह
न प्रान उठ मौ कौं सुनी लिहरानि ब हवा सौं ॥ राम्हा
भराजाय नंद नंदन नै मिली चूकवरी हासी ॥ ४ ॥ मोपर
हिस कहै कै पावो न व्रजहू सत्यभामा नामको ॥ मै तु
मरी दासी सर नाहीं मो पर रोषो आपो ॥ ५ ॥ ना
हिन सकै हम सूरज ही तुम सहित सुतार मुषभान ॥
सूरदास प्रभु वोह स्याम ज पेहै देखो राधा तेहू पन नुपान
॥ २ ॥ धनाश्री ॥ उद्धव यह राधा जू सौं कहियो ॥
जैसें कृपा श्याम को हि कैंकौ आपु करत यों रहि

यौ ॥ १ ॥ मो पर रोस पावत बिन कारन मैं तो हितू हो हा
सी ॥ तुमही मन में गुन ध्यान है ध्यो बिन तब पायो क
सी ॥ २ ॥ कह्यो स्याम कौं तुम सपने मैं मिनमैं तुम रोसर ना
ही ॥ सूरज प्रभु कौं यह न बूझिये ध्यो न उहा लौं जाहीं ॥
२ ॥ ३ ॥ बिलावलि ॥ तब हरि ऊधौ न कह्यो बुलाय ॥
लेपाती रोउ कहा गई तब यह सुलले वचन सुनाये ॥
१ ॥ व्रजवासी या वत नर नारी जल थल द्रुम बन पा
त ॥ जो जाहि विध तासौं ते सौं विधि आदर सपरस कुस
लात ॥ २ ॥ जो सुख स्याम तुम ही ते पायो सो त्रिभुव
न कहूं नाहीं ॥ सूर प्रभू है सो हु पापु नी समुझत हो म
न माहीं ॥ ३ ॥ ३ ध ॥ राग मारू ॥ ग कहि ले प्रणाम नंदरवा
बासौं ॥ ता पाछे मैं पा लाग नेक कहियो जसुमति मे
वासों ॥ १ ॥ एक बार तुम बरसानें ओ जाहु सबे सुधि
लेऔं ॥ कहियो सलाम प्रबषभान सों मेरी समाचार
सब दीजो ॥ २ ॥ श्री दामा आदिक सब ग्वालन कौं मे
रे घाते मेरो ॥ सुरव हि सदैरा सुनाय सब न कौं दि
न दिन को दुख मैं ठे ॥ ३ ॥ मिवल सब हौं व सन है मा
रे ताहि मिलन सुष पै हो ॥ करिकैं समान नीको बि
धि फिर मैं कै मापो ने हो ॥ ४ ॥ दूर की तुम मैं ग्म सब
ने कुंज में इन हां के कृपा नारे ॥ वृंदावन में मन रहैं ॥
तो निरंतर कबहूं न होत बिछोहे ॥ ५ ॥ ऊधव सो सम

भ्र॰ ।। जाइ अपनें कटक करि अरु नेमन की बीतिलो ।। सूरदास स्वा
७ ।। मि छलसों कहि सकल ब्रज की रीति ।। ६५ ।। राग
सोरठि ।। श्री हलधर कहत प्रीति जसुमति की ।।
कहयो हुती मातहे पावे वह बोलन अप्रति हित की
।। १ ।। एक एक दिवस हरि खेलन खेलत मो सों रुग
रो कीनो ।। पहले मोको हेरि गोद लै याको अंक मे
लीनो ।। २ ।। नंद बबा बात तब या गहि मोहू लै बीजन ला
गे मेको ।। सूरस्याम नेंनो ते रोवे मैया छो मन अप्रक
वतनो कें ।। ३ ।। ६६ ।। रागरामकली जसुमति कर त
मो सों हेत ।। सुनो ऊधो कहति बने न हौ नेंन भरि
लेत ।। १ ।। दुहुन की कुशलात कहियो तुमहि भूल
त नाहि ।। स्याम हलधर सुत तुमारे और के न क
हाहि ।। २ ।। और ये तुमसों धाय मिलिहें कहुक का
र जआर ।। सूर हम को तुम बिना सुख कहां होवा
र ।। ३ ।। ६७ ।। रागरामकली कहीं हरि ऊधो सो ब्रजकी ति
सोलेच स्यो जो गग गोपिन कें तन [illegible] तबि परीत
।। १ ।। तुरत अंक भरिर याहि चढायो बिन पवक ह्येक
रि नाहि ।। बिरह जंजाल मे हि गोपिन को अवहू का
विकाहि ।। २ ।। नेरज चरन सीस वंदन कहि प्रजही बहे
हरिनै ढेक ।। सूरज मम सुभग [illegible] पठवलतु मवि
नरहीं वनेहें ।। ३ ।। ६८ ।। रागबिलावल ऊधव चले स्या ७

म आपु सलेम्र जनारि कें गोग कह्यो ।। हरि कें मन
ये हृ यह प्रेम लहे गोउ हु तो मन अभिमान ह्यो ।। १
आतुर चल्यो ल रस्सि मन मैंड़ी कीनो हरि मह तं
करि घठे देख्यो ।। ओमब गामिस्यार आपु सव मृ
ष वनमा नपरे अनंद सुबन निदियो ।। २ ।। पहुंचतो कहा
[illegible] मनसमुझो गरवचन मुखकहत चल्यो ।। सू
र सागे [illegible] रवरायो गोकुल के मारगहि मिल्यो
।। ३ ।। रागकेदारो जबहीं चले ऊधव मधुवन ते ।।
गोपा मन ही जनाय गई ।। बारबार अलि लागत
श्रवनन कछु टुहुक कछु जिय हरष भई ।। १ ।। जहां तहां
काग उडावन लागी हरि आवत उडजात नहीं ।। स
माचार कहे लबेन न आवत उड बैठत सुनि अनत क
ही ।। २ ।। सा बीपर स्पर कहत ये बाते आजु स्याम कें
आवन हैं ।। किधों सूर को उ ब्रज पठवें आजु सुख व
रक धूपावनहें ।। ३ ।। ७० ।। धनाश्री ।। उमगि ब्रजदेख
न कें सब धाइ ।। हरषत मगन घरस्पर बूझत स्याम
उ रहे अब ब्राल ।। १ ।। सोई छब [illegible] सोई आर घ
च ढि करधार ।। पीतवसन कानन कुंडल छवि ये
हैं साज बनाये ।। २ ।। आये निकट पहचाने ऊधव [illegible] नज
लद मन सच्छाल ।। सूर [illegible] रथ नवी आसानव लेन
विरह जनार ।। ३ ।। ७१ ।। जसोदा रवचन ।। रागधनाश्री

अ॰ ॥ उद्धव हम आज भये बड़ भागे ॥ जिन अखियन तुम स्या
२ ॥ म बिलोके ते अखियन हम लागी ॥ १ ॥ जैसें सुमन
सुगंध पवन सों आवत मधुप का यह अनुरागे ॥ उपति
रूप आनंद बढ्यो अंग अंग न मावो फिरि सुख त्यागे ॥ २
ज्यों दर्पन में दृग देखियत दृष्टि रहत न भ्राता लागे ॥ जै
से सूर हमें मिले ऐसा मेरे विरह त्य पात न भागे ॥ ३ । ४२
रागसोरठि ॥ कबहू सुधि करत स्याम हमारी ॥ पू
छत नंद ववा उद्धव सों फेर न सुमति महतारी ॥ १
वोही ते चूक परी विन जाने कहा अब के पछिता
त ॥ वासुदेव घर भीतर आए हम अहीर कर जा
ने कहा ॥ २ ॥ पहले गर्ग कह्यो हम सों सो सब वेद भू
ल ॥ सूरदास स्वामी के विछुरे मरियत नसह सहस सू
ल ॥ ३ ॥ ४३ ॥ रागसोरठ ॥ ऊधो वचन कहो सुनो ज
ज सुमति मैया ॥ आवेंगे दिन चार पांच में हम हलध
र दोऊ भैया ॥ १ ॥ वंसी वेंन विषांन ग्वारो कहू रुपवे
रस वेरो ॥ मति ले जाय चुराय राधिका कछू खिलो
ना मेरो ॥ २ ॥ प्रात न करै यो कलेऊ बहुत सांझन चाखी
गाय ॥ अवदिन ते हम तुम ते विछुरे काहू न कह्यो
कन्हैया ॥ ३ ॥ कहा भई हम अपूत कहत न आये जसुमति
जे दुख पाये ॥ अव सुमिरत वसुदेव देवकी क
हत है जसोदा आयो ॥ ४ ॥ कहियो कहा नंद घायायो ॥

के हो ल निठुर मन वह हीनो ॥ सूर स्याम योगी है जायम
धुपुरी बहुर न फेरो दीनो ॥ ५ ॥ ४४ ॥ नंदवचन ॥ राग
सोरठ ॥ तू करुपरी हरि मोमे चकाई ॥ यह अपराध कहं
लों वरनों कहि कहि निंदत महरि पछताई ॥ १ ॥ कोमल
बाल कमल कर ऊखल मेरे न यह गाय वंधाई ॥ खेवकद
धि के कारन मुरख लाघव धें उरवल लगाई ॥ २ ॥ सूरप
ति कोप जानि जो अब पुने परवत उनकर धरि कहि
यै ॥ आप नमन धर लोम के सहर आगे करी नेह
नेहीं कुमाई ॥ ३ ॥ निकट वसत पहलो आवत ए ते न॰
मन मेरी जड़ताई ॥ सूर अब जहू कोनातो मान त
प्रेम सहित उन की प्रभुताई ॥ ४ ॥ ४५ ॥ जसुमति व
चन राग सोरठ ॥ उद्धव हम तो सीन हीं जानी ॥ सुत के हे
त मरम नहीं जान्यो प्रगटे सारंग पानी ॥ १ ॥ निसि वा
सर छाती सों लाऊं वालक रिह्हुल राऊं ॥ लैसे कबहू
भाग पूरन वा हैं मेरे गोद खिलाऊं ॥ २ ॥ को अव ॥
ग्वाल सखा संग लीने सांझ समे घर आवे ॥ को
अब भोर चोर चोर दधि माखन नेक कोन नु लावे ॥ ३
कारत न हीं वज्र की छाती हरि वियोग [illegible] सहि है
सूरदास हम नंद नंदन विन कहो कोन विध रहि है ॥ ४
४६ ॥ उद्धववचन ॥ राग धनाश्री ॥ तान विसी [illegible]
वेसुध नाहीं ॥ हरि स्याप कहे सा [illegible] नैन सहं

पे.
९॥

बसन्त उर मांही ॥२॥ निर्गुन छांडि सगुन ठक हैरो
सो धों कहो कहां ही ॥ तत्व भज्यो जिन निकट न
छाड़त सो तनपर छांही ॥३॥ लिहे मोक हों कों न
मुख पायो श्री मुख ने उपजाही ॥ सूरदास सेसें ब
सें गति व्यापु रहि विनगहे वांहि ॥१॥ ध ६ ॥ राग के
दार ते सो ओगन हम पै होय ॥ सुनि के वचन तुम
रे उद्धव नैन निसुकात रोय ॥१॥ कुसल कुठल मुक
ट कुंडल धाविर है जो चित में पोय ॥ सूर गय भूवि न
रहे न हि मिनि कोटि कसे किन कोय ॥२॥ ध ७ ॥ रा
ग गौरी ॥ उद्धव स्याम हि है ऐ हियो इन की बात ॥ इ
तनी दूर बसे यों छांडि मधुपुरी जनन की नात ॥१॥
आहि तुरे तेम धुपुरी सिधोरे स्याम मनोहर गात
नाहि न ते मेरे नेन तस फल है दासन कों पांछितात
त ॥२॥ मेहां खेलन की ओर तुमारी नंद सेख
जात ॥ मो क बहुत दिजात रिवरक जोय पहाव
न मात ॥३॥ दुहू ति दे ये पोरन सेस काहा नि
कसि मानो मोत ॥ सूरदास बहे म्यो वेद सो को
मल वेद व धघात ॥ ध ॥ ध ८ ॥ रा. मल्लार ॥ तब तुम
मेरे फो आए ॥ मथुरा कों न बसे नंद नंदन जो पे
मेरे है कीजाए ॥१॥ हम धर हीं को हिस्यो बारबो का
हे को न वरछ वराये ॥ कहे हैं कोजो बहैन धसोब
पे

हल्ल पासते नेहछु डायें ॥२॥ अघ अरिष्ट काग का
सी फल ना थ्यो अविस मन लने को समबाजि बाये ॥ सु
र दास लोगन फोरे अब काहे हरि मल परा ये ॥३॥ ध ९
राग धनाश्री ॥ मेरे कान्ह कमल दल लोचन ॥ अब
की बेर बहुरि फिर आवे रहत यहीं जीय सोचन ॥१॥
यह मेरी जीय पछी धिक लाल सो बेठि रेखत राहे हों ॥ ग
ह आवन गोपाल स्याम सो को हों हिन कब हूं कहिहों ॥
॥२॥ अब विहोत तो नामे चितवत पीर सारत के जी
होहि ॥ अपने मीय वते नैनन भरि देखों हं दिहूल घर
कमोरी ॥३॥ दिवस चार मिलि जाइ सो वरो कहि
यो यह संदेसो ॥ तन के रे उपाय सूर रीजे सूर मिटाय
उरे सो ॥ ध १० ॥ राग धनाश्री उद्धव अब जोइ हंव
हो है ॥ जिय ना को ओर हूद यविचारो हम सा जि
ही दूखपे हैं ॥१॥ पूछो नाय कोन के दोरा तब कहां उ
चरे हैं ॥ लाको षे थो घरे हमारे ता कों कहा बतैहैं
॥२॥ गोकुल सोर मधुरा को बासी कहा लोक ह्वै है
हैं ॥ अब मिलिवे को चाहत उहां न हां हूं पात नहीं रहे
हैं ॥३॥ इहां गए यन चराय बेरो छांड़ो ओ नहीं लालच
देहें ॥ इतने मेंन नहि मिलत सूर प्रभु पिषिके हीं पधि
तेहैं ॥ ध ११ ॥ राग कल्याण उद्धव इन नीक हिये लाय
पतिक षसाय भई है तुम बिनु परम दुखित हे नाय

www.vallabhacharya-agramara.org

५.
१५॥

१॥ मेले सत्रु हू हवा राषत हे अविपवन लै लै हू कत नाय
मेहा मेहां को रे इहन तु मकी नो खूंघत से इसोइ ठा
य ॥ २ ॥ करत न विचार कहा अवतु मरें हैं हम अनि ब्या
कुल हीं ॥ ना को सूरस्या ढि डा ख्यो है या जस में नैन मी
न ॥ ३ ॥ ५४ ॥ राग सारंग ॥ इन नैनन न काहे को सीये
अपुजे नान जो न नंद नंद न वो होत भय नन ते याधि
लीय ॥ १ ॥ अघव कं बष भव रूल वं धन ते आ न
मीति रा धा न सपी ये ॥ इहू मान में रयो गिर कर ध
रन न पुल कित आनें द हीयो ॥ २ ॥ विधु रन की हम
बात न मा नी वचनन मान बज रा र जिये ॥ सूरदास
प्रभु लों लाल व सवे सह ति एक पति हियै ॥ ३ ॥
५३ ॥ राग सारंग ॥ यह कुमया जो जन वही करते मे
वत अवलो कित गो कुल के लोग उ वरते ॥ १ ॥ बर
वत अोर व की बजा मुर को हो फो न विधि मर ली भू
मि पर लव रु कोर रहा कान न ल सम मुष ना उ उबरते ॥ २ ॥
२ जअरिमु ष के सीजष भा मुर ष न लाये इ सौ डर
ते ॥ सूरदास यह है सब कहा है मो रसी मन धरते ॥
३ ॥ ५५ ॥ उद्धव वचन ॥ राग सारंग ॥ धन्य नंद धनि
जसुमति रानी ॥ धन्य ग्वाल धन धन्य गोपी ज
न गोहिय कोय सागर पानी ॥ १ ॥ धन व्रज भूमि ध
न्य वृंदावन जहां अविनाली आपाये ॥ धन्य गुत्र आ

म दूर पम भू हू म सव दे खन त आ ह ॥ २ ॥ ५५ ॥ गोपी वच
न ॥ राग सारंग ॥ भली बात सुनि य तें हे आजु ॥ कोकु
कम लनै न पठ यो है तन बना य अपनो सो काजु ॥ १ ॥
पूछ मुस नाक है वे से हे अवना हिं ने कर ते कोजु ॥ क
सम्या रिवसु है व घर आरउ प्रसे ने को सी ये राजु ॥ २ ॥
रा जा भये व कहा है यह सुष सबै सं ग मिलि लिये पम
मा जु ॥ अव सुनि सूर कहा कोऊ फिरि ऐ न घ में मेना ह्रि
व सत रबन राम्रु ॥ ३ ॥ ५६ ॥ राग सारंग ॥ आजु कोऊ नी
की बात सुनावे ॥ के मधु बन ते वैर लाडि लो का हू दू
त पठावे ॥ १ ॥ भोर भये चै हुं दिसते उठि कै फल नली
गिनै गावै ॥ तुम भा षाउ के वे चढि चढि अगअंग सुग
न मनावे ॥ २ ॥ भामि न ल कसबी न न चित यो ने न नी
र भरि आवे ॥ सूरदास सलो ने बज में गो पन नाथ
मिलावे ॥ ३ ॥ ५७ ॥ राग मारूहे ॥ देष्यो नंद द्वार रथ
गाढो ॥ को है रिस षी सुफलक सुत आयो पहेसरे
हे अनि गाढो ॥ १ ॥ कान्ह रा रत न हीं लेग यो अवक
हा कारन आयो ॥ मैं जानी ये जन सुनत ही म मूभ
पावक रन उठि धायो ॥ २ ॥ इत नी कहत आय गये उ
अवन हिंछि न रहस नही नो ॥ तव पहचा न सषा ह
रि हू को परम सु चित मन कीनो ॥ ३ ॥ तव उपर ना मै
कीयो अनि रस्वि सों अोर सब न कर जोरे ॥ पुनि घ

प० तहते नेसेई देखे परम चतुर सखि मोरे ॥४॥ तुम्हरो र
११॥ रस पाय हम अपुने जन्म सुफल करि मान्यो ॥ सूरसे
ऊधो मिलत भयो सुख न्यो रूक पायो फान्यो ॥५॥४८
राग मलार ॥ है कोउ वेसीये अनुहारी ॥ मधुवन
तें इत आवत सखि हो कि देखो नेन पसारी ॥१॥ वे सोई मु
कट मनोहर कुंडल पीत बसन रुचि कार ॥ वे सेई बा
ते कहत स्वार थ से अजन न बहा प सार ॥२॥ कांति
क बी कबी धो हरि पंतर मानो बीते दिन चार ॥ सू
र स्याम बिन ये तरपत हें मानो भ्रमि न विन बार ॥३
४९ ॥ राग सावेरी ॥ आजु घने स्याम की अनुहारी ॥
आवत हें उन ये उमगि सों देखि स्वरूप को पार ॥१॥ इंद्र
धनुषकी उर बनमाल चितवन चित हरे ॥ मनो
हलधर अग्रज मोहन के म बन नन संघ परे ॥ ग
ई चलनि रूदत बदेष मोहन भ्रमनी रे हा हार
सूर सकल गुन सुमिर स्याम के बिकल भई ब्रजना
र ३ ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ आजु [illegible] आयो है
किधों वह रूप क्रूर क्रूर है जो ये मेंनि [illegible] ठायो है
१ ॥ ना को रथ ठाढो मेरे द्यो तुम सों माधव नायो
है ॥ किधों हरि अपनो दुखित दीन नन पर म भु संदेश
पठायो है ॥२॥ चली लिमिरि सब ई षव कार न कू
धो रस रहि स्नायो है ॥ नव पहुचा न जानि प्रभु को

मल कमल जो सिर नायो है ॥३॥ हरि हें कुशल कुशल
ल बल दाउ कुशल लोग सब आयो है ॥ हे वह नगर कु
शल सूर प्रभु हरि सुदृढ़ छायो है ॥५१॥ राग
सावेरी ॥ हरि परतन सरूप रि षावे ॥ ने हम गऊस
गए नहम गय आवे ॥ वह मग आवे सखि तनु लावे रे
सो ध्यान बिचारे ॥ मुकट कुंडल तन पीत वसन के
ऊ गोपिन्ह की अनुहारी ॥ वेई मुख न निरखा गी तब ह
सबे नि सुखें पायो ॥ ऊधो जोप जानी अनुकूल जानी स्या
मसंदेस पठायो ॥१॥ चली सखी पूछे कुशल बाते ॥ कं
हिये ऊधो हरि कुशलात ॥ कहें कुशलातें साची बा
तें आपन कहो के नाहीं ॥ केगर बाने राज समाने अ
वचित हमन सुहाई ॥ केकठिनत न कीये हेरे कांके
बारबार अउलाई ॥ अब जिन कपट कछू जिन राखो
पूछें से दिखाई ॥४॥ कहो ऊधो तुम कयो ब्रज आल
तब यह कहो हमके स पठाये ॥ कंस पठाये तब ह
मतपाल के ईन [illegible] रवासी ॥ सुने संदेसो न जो अंदे
सो तुम हो चतुर सयानी ॥ गोप सखा जिय में जि
ने जानी रूप बगत हे अविनासी ॥ नेंन मूंदि कें अं
तर ध्यावो सब घट घट के बासी ॥३॥ उद्धव जिन
कहे प्रभु कीय प्रभुताई ॥ सुनत जीव कुशि गमोरि
सुक कहीन जाई ॥ रिसु कही नहिं जाई कुटिल योनि

श्री
१२॥

पुनियालों चतुराई ॥ दासीकुबजा ऐपोछी संगत
कों नवेदमतगाई ॥ तुमहू भलीकरनहोऐसो एहम
कों वडेसयाने ॥ जोकछु वस्तुदेषियत नैनसों ऐसो
होयछिपाने ॥४॥ ताहोसोएहमनमाने ॥ परब्रह्मकी
बातेसब कोऊजाने ॥ सबकोउजाने सोमाननमा
ने ऐसबकछु कहिऐपावे ॥ जोकछु कुबजाकेमन
ऐपावेसोई सोईनाचनचावे ॥ जाकोदुरलभसुषह
मसबकों ऊमरेदेषकोंजावे ॥ गोरसदेषनराध्योद्
हातो विधिनाकीगतिकोंजाने ॥५॥ उधोकमल
नैनकों कोऊहियोजाई ॥ एकबेरब्रजनेदेहुदिषा
ई ॥ ताकिप्रीतिनिरंतरमनमें तामनकोंभसु
हावे ॥ शंकरविरंचिशेषऐपोरसुरपति तेहुदास
नहीपावे ॥ वेसोईरासविलासकुंजाहलबरघर
माषनहरिये ॥ सूररासप्रभूमिलत [illegible]तसु
षविरहस्वासतनजरिये ॥६॥ ६२ ॥ उधववच
न ॥ छु ॥ रागसारंग ॥ गोपी[illegible]कुग्राना
भ केसन्रपकोंमारिछोडेबंध[illegible]पितुमात ॥१
कोहोतविधिमें तुमहारी करिहींयोउग्रसेन हिरा
ज ॥ नगरलोगसुषीवसनभगतनरेसुरनकेका
ज ॥२॥ कोहेलिखपातीदई यहकह्योकछुकमसंदे
स ॥ सूरनिर्गुनब्रह्मउरधारत सोसकलसंदेस ॥ १२॥

३ ॥ ६३ ॥ गोपीवचनपरस्पर ॥ बिलावल ॥ पातीमधु
बनतेंआई ॥ ऊधवहरिकेपरमसनेही तिनकेहाथ
पठाई ॥१॥ कागदछुवतनैनभरलेने नपरसकाहूकंठ
लगाई ॥ कोऊपूछतेफिरफिरऊधवसों अपुनेलि
षीकन्हाई ॥२॥ कोउहिरदेसोंराषतऊधो[illegible]तवउव
नाचतुराई ॥ सगेमेंध्यानहमारोराषो सूरदासस
तुदाई ॥३॥ ६४ ॥ रागसारंग ॥ पातीमधुवनही
तें आई ॥ सुंदरस्यामलिखीकरअपुने आयूसु
नोमाई ॥१॥ अपुनेअपुनेग्रहतेनिकसीलेले
कंठलगाई ॥ कहाकरेंसुनियेउधव हमहरिबिनु
कछुनसुहाई ॥२॥ नैननीरभरतव्रजनसुररि
मेंमतबानेतुमरई ॥ सूरदासप्रभुसुनयेवसुकेंमु
धहमरगिबिराई ॥३॥ ६५ ॥ रागमलार ॥ कोउअवेनवा
नन्हीपाती ॥ बनसिषदावतेहै नेरनेदनक
ठिनकोंति ॥१॥ नैननसजलकागरहेप्रति कोमलक
रअंगुरीअति[illegible]ती ॥ परसनजेरेविलोकितभी
जेहींकूंमानिर[illegible]ती ॥२॥ सबसुषलेगयेस्या
ममनोहर हमको[illegible]दुषेथाती ॥ देषजीयेस्याम
सुंदरकोंरहिहेचरणनपरष्ठाती ॥३॥ तुमकहिक्रप
सदेसहेसोहमकों[illegible]नी ॥ [illegible]सुनि
ये [illegible]प्रभुबिहेनेमरननसकआती ॥४॥ ६६
श्री

सू० ॥ रागधनाश्री ॥ लिखिकैब्रजनेनाथकीपहधाप ॥ ऊधे
१३॥ कांधेफिरतसोमपरसुनिकें आवतताप ॥१॥ सब
ननकीतिनंदनंदनको घरघर भयोसंताप ॥ गोनें
कहांजोगआराधनअबगतअगमअमाप ॥२॥
अधरीमेंसुबजाअधिकारीसुनियतजाकेद
प ॥ नाहीकेमसिषावहो ऊधोकितकीमैंग्रमनपा
प ॥३॥६॥ रागकेदार ॥ लिखिलिखिपठवनेलागे
॥ कागर ॥ मदनगोपालमगदेषेबिनुको
मानेमननागर ॥१॥ ऊधोजोगकहोलेंकीजेमनवि
नसूध्योसागर ॥ सुनरेमधुपकाचकेबदलेकां
देहेंमोतिसागर ॥२॥ मधुपसदेसोकिमहेसुनसे
मधुबनेस्यामउजागर ॥ सूरदासप्रभुबिनकैसेरा
षेतनजोबनकोगागर ॥३॥६॥ राग[illegible] ऊधो
तुमेंगुपालहुहुई ॥ कबहूकहूंसुधिकरतहें
कीकिधोंप्रीतबिसराई ॥१॥ हमबेलाअपान
मेरस्मतिबरजतमीतनगाई ॥ [illegible]तकहो
तिनसांचीक्षाहेसुहहुराई ॥ कबहूबहुरि
आवेंगेऊधोकोबैठेलिसुतेहाई ॥ कहूंमपाज
नसूरप्रभुनेकालकरसेदिषाई ॥३॥६॥ रागम
लार ॥ अहोपत्रकुबजाकेसनिवाजो ॥ धुवत
अपदपरीचालगाइमिटि ॥ नवसनकेउनकीलाजो १३॥

॥ मिलीअपायआगेदरवाजेंदेकेचंदनकरिठगवा
जी ॥ आयोतुरतसुहागसवनकोप्रभुवसकरेंसबई
वहराजी ॥२॥ सूरदासप्रभूअबवहकुबरीमनल
सुहागिनकेसिरगाजी ॥३॥७० ॥ रागसारंग ॥ सुनि
यतराजनीतठहराये ॥ समुझीबातन[illegible]मधुवन
केसबराचारतबहाये ॥१॥ एककुबलितचतुरहुतेआ
गेहोतामयपदिअपाये ॥ बडीबुद्धिजानीहमऊ
नकेसंजोगसदेसपठाये ॥२॥ ऊधोबडेसोगयाजें
बोकारहितऊलतधाये ॥ अबदेषुंमनफेरआ
येहेंचलजोचितहेंचुराये ॥३॥ तेबोअपनीतकरेगे
ऊधोफेरअपनीनधुउभये ॥ राजनीततोयहसूरजे
पजानजानतदुखाये ॥४॥७१॥ रागनट ॥ ऊधोनेक
सुनसहरिकेबवनननसुनि ॥ कंचनकाचकपूरष नि
लीकरत करतवारबार लषदुष ओगुनगुन ॥१॥
मगउनहीकोसुनतयहूतजियेजायवसोवनका
नव ॥ प्रेमक[illegible]लेठगनेहींयतआवतमिहा
मागन ॥२॥ जा[illegible]कपनतेकरीप्रीतिअप्रतिलोककहा
गेइरहारी ॥ सूपननधायोनाककिपातीलिंयबसहो
यमुरारी ॥३॥ वालिसेबाधिपताजपठायोफोनेंय
सेबनाई ॥ सूरप्रीतनानतेओहरिकीकहूंपबल
कीनजाई ॥४॥७२॥ रागसारंग ॥ ऊधोधनितिहा

सू० रे थ्यो हार ॥ धनि वह प्रभु सुर धनि तुम सेवक धनि
१४॥ हम परसन हार ॥ करी टेव बबूर लग्न बन चंदन
की करो छार ॥ हम कों जोग भोग कुबजा कों ए सो
समुझ तुम्हार ॥ २ ॥ तुम हरि पेढे चातुरी विद्या निपट
कपट चटसार ॥ साहन बंधो चोर नहीं छाड्यो चुग
लन कों इत वार ॥ ३ ॥ समुझे कहा तुम्हारे ऊधो हम ब्र
ज नारि गवार ॥ सूरदास कैसे के निबहै अंध धुंध
सिरकार ॥ ४ ॥ ७३ ॥ राग केदार ॥ ऊधो जो पालक हु
के वाको ताको है पहचान ॥ तुम कों हो जोग कों नेकै
सिखए यहां कहत हो ग्यांन ॥ १ ॥ प्रथम वेंन धुनि क
स्यो हस्यो मन राग रागनी ठान ॥ धुनि वह व्याध वंस
विश्वास नहित न विसम सरताने ॥ २ ॥ अपुने स्वार
थोर उरि बैठे ले कमल भें तोर सजान ॥ धुनि वह व
बठे फेरयो वारि कहा पहचान ॥ ३ ॥ पवधावि
पूत नाम हारी बांधे बलि सेरा ने ॥ अपने ता कीना
कनि पाली सूरसदा पहुंचान ॥ ४ ॥ राग मलार
मिलगए हम माने ऊधो का को ॥ [illegible] त रहे वसुदेव
देवकी नाहिन मात पिता को ॥ १ ॥ का को मात पिता
केतु के दूध पीयो हरि जाको ॥ नंद जसोदा लाड़ल
डायें नाहिन जान्यो ताको ॥ २ ॥ कहियो जाय पवना
पकी नतो यह संदेस अवताको ॥ सूरस्याम प्रीति १४

रहि जानें कुटिल संग कुबिजा के ॥ ३ ॥ ७५ ॥ सारंग
ऊधव प्रीति नई अति मीठी ॥ हम को जोग भोग कु
बजा को बोलत बात बसीठी ॥ १ ॥ ताके ऊपर लोन
लगावत लिखि लिखि भेजत चीठी ॥ सूरदास प्र
भु तुमरे दरस बिनु जरबर भई अंगीठी ॥ २ ॥ ७६ ॥
राग सारंग परि पुकार हम यह सखी सुनो एक जो
गी आयो ॥ पवन सधावन भवन छुड़ावन नरवन्स
काल मुलाल पठायो ॥ १ ॥ रामस्व बध जोइती स
मुझौ तिन कहा हित लायो ॥ कनक बेलि कामिनी
अभीला जोग अग्नि दै वे कों धायो ॥ २ ॥ भव भय
हरन असुर संहारन काहू हित मधुपुरी आयो ॥ जा
कारन त्याग्यो अब हम गुर जन जस अपजस सब सी
स चढायो ॥ ३ ॥ सुंदर स्याम धाम धंधे में बैठे मीन
अधिकार न पायो ॥ छबि सारी प्रीति साबरे म
ली करी अब जग तहं साधो ॥ ४ ॥ ७७ ॥ राग मलार
को ऊ माई यह मधुबन ते आयो ॥ सीय सुमति सु
नो तुम चित्त दै हेत कहि लिखा हूं पठायो ॥ १ ॥ जा को
जो गोपिय जन नंद कहत है ग्यान सो कारन सुनायो ॥ सो
ई दूत परम उदार मह मसखी घन बीच बहायो ॥ २ ॥ अ
ब गोपाल मधुर अवलनि कों व्याप रूप गहा
यो ॥ मन जन सूर सुनि होत अब बन सुधनै ते सो वि

श्र० २५॥

गमबिरमायो॥३॥७२॥मलारराग ऊधोजोकोउ
यहतनेफेरवनावे॥तोहूंनेंहनेंदनतजिमधुरङ्पो
रनमनेमेंलावे॥१॥ज्योंथातनकरीतुचास्वादकरले
करहुंदुभीसाजे॥मधुरउपंगसमसुरनिकसतभ्र
म्हकोन्हकहिबाजे॥२॥निकसतमानहरोयतनमा
रीदुमलागतहिदम॥सूरदासप्रचफलसाथा
लेलउठेहरिनाम॥३॥७३॥रागनट ऊधोजोहूजा
हुहमजावें॥जैसेहरिलेतेलतुमसेचगववचनचतुर
रगावे॥१॥निर्गुनग्यानकहोतुमपायोकापेसोप
रेहावे॥सोउपदेसदेउकुबजाकोजाकेहायवि
कावे॥२॥घसिघसिचदनउरमेंलावततकोवप
हमजउपावे॥सूरदासकेसीवहछेपवलाजाकेप
र्मसुनावे॥३॥७४॥रागसोरठ ऊधोकहोसोकीरम
लकहियो॥मोतुमहमेंजिकाधोचाहतसोनगोवे
सेरहियो॥१॥हमरोग्यानजोघालदीनेहहतुमरे
भावेंहासी॥याजीवनतेमरन[illegible]हेहेकर
वटकासी॥२॥केहरिबिरकीयोहे[illegible]लिखिलि
खिजोगपठायो॥हीनोजारि[illegible]करडारीके
हारिबसानननगायो॥३॥केहरिहमकोंदर्सीमिमि
लाँाकेलेमाइपोसाये॥गोपीमानतजनसुदरज
पपवदसेसतुमारेमाथे॥४॥७५॥जोकीसबचन॥ २५॥

गवरत॥रागसारंग॥इहह्तपंतरभवरातकलायो
निजसुभावछपतुम्हारनिकटदेहेसुंदरसद्रसुना॥
यो॥१॥पूछनलगीताहिसोंगोपीकुबजातोहिपठा
यो॥केधोसूरस्यामसुंदरकोहमेंसंदेसोलायो॥२॥
८॥रागबिलावल कहाकहोंतनजानतहो॥नविम
तेहोउतमानलिगेंतुमधोबेहुनायपठएहो॥१॥बे
सेईसनग्रसलतनसुहरावेईमृषनसखिलाराहो
सेवनकेतनवसंगमिधारेसवजकापरफिरभाए॥
हो॥१॥मुनेोमधुपएकेमनहोसोलोतहालेछग
रहो॥अवइहाँकहस्कारनचाहूतहोताकारन
उढिधालहो॥३॥मधुबनकीमाननीमनोहरत॥
होगाउवेहाँभाएहो॥सूरजहाँलोस्यामगातस
वओंवनलेकरपालहो॥४॥८३॥रागसारंग एसी
हेजाहेनकीरीति॥मनदेसरवसहरतपरायोकर
तकपटकीमीति॥१॥ओषकर घटद्रपतुबेदलवसि न
केबिसारहत[illegible]॥२॥दिनकरउदयपङपनतउबे
ठतफिरवकरनेपहरूचांव॥३॥भवनतुमंगपिठ
रीपाल्योजेसेमननीतान॥कुंतनलजेनहीक
वहूंमहन्नइसेभजिमान॥३॥कोकिलसजाकउ
रंगस्यामघनहमेनदेखेभावे॥सूरसखेसबनुहा
रस्यामकेफिरफिरस्रूरतनकरएपे॥४॥७६॥

ौबेचन ॥ रागनट ॥ जब लागे हृदै सान नैरी ष्पा
वे ॥ तब लागे सब पानी कौ चुपरो विवेक नेक नहीं
पावे ॥ २॥ विना विचार सबै सुपनो मे देष्यो जग जा
हे ॥ नाना रूप जो मध्या पाव कगवट मषैं ते होई
३॥ तुम हौ एक हृते सकल घट व्यापक ओर सबन
ते न्यारे ॥ न घसि घसौं सव अंग सब अंग जर तहे
निकस करे किन सियरे ॥ ४॥ साची वात सबै बोल
ते हो मुष मे नेके तुलसी ॥ सूर जो सो सदेह मे वत
न प गुर ऊपर गुडकी ॥ ५ ॥ १५ ॥ सोपाव चैन ॥ रा
ग सोरठ ॥ उद्धव मो मन अधिक कठोर ॥ निकस न
गयो कुंभ के जल ज्यों विछुरत नंदकिसोर ॥ १ ॥
हम ते भली जल चरी व पूरी अपुनो प्रीति निब
हे ॥ जल ते विछुरत ही तन त्यागे पुनि जल ही को
चाहे ॥ २ ॥ हम जो प्रीति रीति नहीं जानी तो अब
नाचत जो ॥ ३॥ हमरै प्रेम नेम के रहु सब सब तल
जो ॥ ४ ॥ एक चरज एक सुनि लीजे [illegible] ओर है ते नेपर
सो जीये ॥ सूर स्याम प्रभु पावन कहि गये सुनि
वि रुक जीये ॥ ५ ॥ १६ ॥ रागसोरठ ॥ तेरे आइ है
प्रेम कहो प्रिति कैसे छूटत ॥ कहा कहौं ब्रजना
थ चरित्र अंतर गत लूटत ॥ १ ॥ व रचि वचन व
चाल मनोहर बहु मुनि ध्यान मर सुरना वन

वह नटवर भेष नंदनंदन को वह विनोद वह वन ते आ
वन ॥ २॥ चरन कमल की सौंह करत हौं यह संदेस सहन जो
सिषला गत ॥ सूर हृदै सब वह तन ष्ठा बिसरत मोहन मूर
ति सोवत जागत ॥ ३॥ २७ ॥ राग धनाश्री ॥ असिय हरि
हरि रस मन की भूषी ॥ कैसे रहै रूप बिनु देषें सुनि वाते
रूषी ॥ १॥ छिनु छिनु पल पल एक टक जो बत तोऊ रह
ते ऐसी ॥ २॥ अब यह जोग सदेसो सुनि कै अकुलानी उर
रूषी ॥ ३॥ वारक कबहूं अपय आनि दिखावे जो पै पीवत प
यूषी ॥ सूर जोग जिन नाव चलावो रचि सरिता मई सू
षी ॥ ४॥ २८॥ राग केदारो ॥ नैन निपट कविनई बानी ॥ जा
दिन ते विछुरे नंदनंदन नैंक नहीं कुसलानी ॥ १॥ जनक
न लागत रहत ध्यान धर बार बार दुषवन पानी ॥ ना
न जु पाल मिले सुनि उद्धव कर्म हिलै कछु बन मानी ॥ २॥
समुझ समुझ अनुहार स्याम की अपनि सुंदर बरसा रंग
पानी ॥ लो ले गुपाल मिलै ॥ सूर दास यह मोह रह तनि
तह रिस सूरत मन [illegible] मानी ॥ ३॥ २९ ॥ राग मारू ॥ बे
षातें जमुना तीर की ॥ कबहूं हरत करति हैं ऊधो हरन
हमारे चीर की ॥ १॥ ले सब बसन न महूं कदम ऊपर चढन न
टक बल बीर की ॥ २ ॥ देहु देहु सब सषी पुकारत अधिक
न हुई नीर की ॥ ३॥ सूर दास प्रभु अंतर जामी मानें वि
मान विथा पर पीर ॥ ४ ॥ ३० ॥ राग मारू ॥ हरि विन यह

श्री
१७॥

विधि कहि आनि रहियत ॥ पहिरी राजा नंदन हो ऊधो
ताते तुम सों कहियत ॥ १ ॥ चंदन चंद रुचिर नव पाव
क समय सचपल यह तन न रहियत ॥ रजनी जागत
नि नहीं तारे नैन न करत निरवहियत ॥ २ ॥ दास
र हत्या विरह सिंधु कों कैसें हूं पानन लहियत ॥ ३
फ बार मिलिवे की आसा और कछू न हो चहियत
३ ॥ मनसा वाचा आस पल सुर प्रभु धान नि नमन नसों
कहियत ॥ ४ ॥ ९२ ॥ राग गूजरी तुम नों द्वालद
वालि धक हियत मानत हो परपीर ॥ विछुरे मा
नन्दा घच जरे हैं क्षिन हम कित बलवीर ॥ १ ॥ मन
अप जसा नो सिर स्प पुने क हिन म हन कों पी
र ॥ सूरदास प्रभु मिलन कहत हैं रवितन पाऊं
तीर ॥ २ ॥ ९३ ॥ राग धनाश्री ऊधो ये बातें जो वौ ली
क छ मीठी कछु बाटी हिकें कितेउर स्पंकन साली
॥ १ ॥ हरि घनस्याम सींचि यह वेली हम सकमल ष
रि पाली ॥ अब ते वेली सूकन लागी [illegible] ग रखव
न माली ॥ २ ॥ नैन बच हृदय पाहुत [illegible] वेंतु मेरा
व नसा गरमें न हृ लाल हि ॥ सूरज प्रभु विधुर
त मगर हम जीवत वलिकाल हि ॥ ३ ॥ ९३ ॥ राग धना
श्री ॥ जो पै तु पाल हमें जीय भावत ॥ तो सुनि मधु
प जो मोदान हन अवहीं गोकुल लावत ॥ १ ॥ जिन १७॥

नैनन मोहन मुख निरखत निस दिन रहत निहारे ॥ ते
ई नैन रहसु ने यह आवन अवधि विचारे ॥ २ ॥ जिहि तन
ही संग सेज सुख हरि सभी प सुचिमानी ॥ सो तन रह्यत
रत निशि कामर तल फत रोनि विहानी ॥ ३ ॥ जे हि श्राव
न न सुनि वचन मनोहर मुरली कर मुख बाजत ॥ ति न
श्रवन न निर्गुन [illegible] फ के सुनर के एला जन ॥ ४ ॥ जि
नैनन सौंधा हरन मनोहर मूरति [illegible] प ति ही निस दिन नि
हारी ॥ ते [illegible] लष कहा मति मत ने सूरस्याम व्रतधारी
॥ ५ ॥ ९४ ॥ राग गौरी हरि बिनु कौन सों दुष कहिये ॥ मन
जिन मन हि मय तहै निस दिन उर अंतर दुष सहिये ॥
कानन भवन रैन अरु वासर कहूं ना हिने सुष लहि
ये ॥ हे केहू जग न मैं वसि के लोक लाज दुष सहि ये
॥ १ ॥ कव हूं सो जीय आवत है जमुना जल में वहिये ॥ सू
रदास प्रभु कमल नैन विनु कैसें के व्रज में रहिये ॥ २ ॥ ९५ ॥
राग जेतश्री ले चल ऊधो उहि देस ॥ मदन गुपाल ती
रमन उमजो जोन बसे या षस ने के वेस ॥ १ ॥ बह मूरति
हृदय में बसत है मुरली अधर मनोहर वेस ॥ कुंडल लो
ल तिलक मृगमद के गावत आवत नटवर भेस ॥ २ ॥ ह
म चातृग सम सवै रटत हैं सुमिरें व दिन लग्क ॥ सूर द
स प्रभु सब सुषदायक अवधि हरि कव मिले नरेस ॥ ३ ॥
९६ ॥ राग सोरठ ऊधो हरि यह हियह कहा विचारी ॥

अ०॥ सदा सखी एरहत मैं रावन करत विहार विहारी १
१२॥ रूपवंतो रंगरंगे कुबजा के बिसराई ब्रज नारी ॥
कछू कमंमकियो बदननें मेंतह हरि बेनोद अधिकारी
२॥ दिनदस संपोसहो तुम अजलें देषो रसा हमारी ॥
सालरहत नित आसालागी कब आवें गिरधारी
३॥ तुम नो कहो जोग हत नफेको हो कौन बिधक
रिये ॥ हम मन न ध्यान नंदनंदन के तुम हि सुमरि यु
नजी जे ॥ ४ ॥ सुंदर स्याम कंठ बेजेती माथें मुकट बि
राजे ॥ कमलनैन नम फरा कल कुंडल निरषत ही म
यभाजे ॥ ५ ॥ तातें जोग न आवत मनमें तू नीके
करिराष ॥ सूरदास स्वामी के आगे निगम पुकारन
तसाष ॥ ६ ॥ १८७ ॥ राग धना० ॥ ऊधव हरि हमसों
सहु कीनी जैसें की स्वरूपा की ॥ नरफल नरयो पुनम
नरी ये वेपानी पीरनजानी ॥ १ ॥ निसदिन सोष
लषनलागन कौ हिजतन नकपि हारी ॥ जैसे भुजंग
मन जन न कांचरी सोई गति भई हमारी ॥ २ ॥ वे नी
सुनगसुही करप्रभु ने चरननओ बनहीको क
हाँक हौं मैं स्याम सुंदर सों निपट निठुर मनकीनो
३ ॥ एक समे प्रभु ने कर हाथि गूंदरन फूल पहरा
ए ॥ अब वे सेम हीके सुद्धा मधुपुरहाथ पठाए
४ ॥ बोवा वंदन अंबरउपरगजो वा सुष में हमरा १२

षी ॥ ताहि तन मन चढ़ो मैं ऊधो तुम हू करि होहासी ॥ ५
वे तुव बसत हैं मधुरा नगरी हम तुव बसत या गाम ॥ ऊधव
हरि सों यों जाय कहियो प्रान तजे कहि ठाम ॥ ६ ॥ सीत
म प्यारे प्रान हमारे रहे अधर पर आय ॥ सूरदास हरि
नू के आयें कौन कहे दुखनाय ॥ ७ ॥ १८८ ॥ राग धनाश्री
अँखियाँ हरि दरसनकी प्यासी ॥ देख्यो चाहत कमलनैन
न कौं निसदिन रहत उदासी ॥ १ ॥ आये ऊधो फिर गए आँगे
न डारि गरल की फांसी ॥ केसरि तिलक मोतिन की माला वृं
दावनके बासी ॥ २ ॥ काहू के मन की कोउ जाने लोगन के म
न हांसी ॥ सूरदासप्रभु तुमरे दरस बिनु लेहें करवट का
सी ॥ ३ ॥ १८९ ॥ राग बिहाग ॥ मधुकर फिरि कबहू मिलि
हैं हरि ॥ कमलनैन के मिलवे कारन अप्रभु मोसो मन नर
ही को हो ने करी ॥ १ ॥ मैं अपि विन आगम मधुबन नें न नि
सों बिया कहत कपटन पर ॥ कहें न प्रगट करें मन दुपनि
सों दुसह दुःख की अवधि गई टर ॥ २ ॥ धीरज धरत प्रेम
व्याकुल मन ले तन आनन नीर लोचन भरि ॥ सूरदास न
न पछिलिन भयो हें प्रतिदिन योग साधन सकल निसरि
३ ॥ १९० ॥ राग सारंग ॥ मेरो मन वेसो यह तरतकरे ॥ नंद
सुत सि कान नचक रूप बकोक न चितेते न माहि टरे ॥ १ ॥ जब तें
कालंगी धनसंग अब लमुरली अधर धरे ॥ मुष मोरे सें न
सार रूप चलसों जसुमति अंक मो ॥ २ ॥ सांझ समें सो षरी

भ्र० ऊलनन वह सुष क्यौं विसरे ॥ सूरदास प्रभु रस
२५॥ नेकारन नेंनन नीर ढरे ॥ ३ ॥ १०१ ॥ राग सारंग
मलनैं न प्रभु नेगुन सौं मन हू माधौ बांध्यो ॥ ला
गत नौ जान्यौ नहीं विषमवान सांध्यो ॥ १ ॥
ठिन पीर वेध्यो मार गयो सर माई तंत्र मंत्र की
यैनौ ऊडु षनहीं जाई ॥ हे कोऊ उपचाम केरेवा ठि
नइई वैपाई ॥ २ ॥ कैसें ऊन दरसा तौ मिलें पोरन
उपाई ॥ सूरदास प्रभु प्रेम फंद तो छोन हिं जाई ॥ ३
१०२ ॥ ऊद्धव वचन ॥ राग सारंग ॥ गोपी सुनो ह
रि संदेस । कह्यौ पूरन ब्रह्म ध्यावत सकल तजि ॥
ध्याये सं १ में कह्यौ तोसों त्यमा नोसगुन डारे न
ष पंच वेगुनमसकल दे हो जगत सों मा ष
जन्बितु नर मुक्ति नाहीं ये विसरत संसार ॥ पु
षन नाम नसचल कर चरन पुवसार ॥ मातु
पिता को ऊ नाहिं नारी जगत मिथ्या लोइ ॥ सूरदु
ष सुष नहीं जो के भजो ताको सोइ ॥ ४ ॥ १०३ ॥ राग
सारंग मधुकुर येमनो वेगर परे ॥ सुनमुन नाही जो
गीता के मदु मुसिक्यान परे ॥ १ ॥ वेपरन विसि
न नाहिनें विसरत लाल उरस चरे ॥ कमलनैं
न सुनु राग भाग भए रूप नीरस गलित गरे ॥ २ ॥ वा
की मोहू पक रगाहि रहे ते तानेव गरईपरे ॥ सूधे हो २६

नन स्या न पूछ जो विपवि चिवे ह्रमेरे ॥ ३ ॥ गोगंग गंभीर कु
पाईजो पेत्यो देष नई ह्रहेरे ॥ सूर कहत हमरे मैं सीरहि
है स्याम वियोग भेरे ॥ ४ ॥ १०४ ॥ राग सोरठ ॥ ऊद्धव द
रानेको ऊपधिकारी ॥ लेन गए हे यह जोग आपुनो तुम
कि न होत दुषारी ॥ १ ॥ यह तौ वेद उपनिसद मति है म
हापुरुष व्रतधारी ॥ हम अहीर व्रजवासी ना
री कौतम नारी ॥ २ ॥ कोई है हों सुनन कहत हो कासों
कैनकाविस्तारी ॥ सूर स्याम के संग गयो मन नो
अहिन कां चरो ढारी ॥ ३ ॥ १०५ ॥ राग धनाश्री ॥ कहौं कै
सें प्रभु नेके काजे ॥ रिनरम लगें हूं करि है सू जो हरि
मिलें जो गहूं साजे ॥ १ ॥ मोये ज्ञ राप हह गन केथालेस्प
भस्म अंग मुषमाजे ॥ सींगी रेहुमे षलासे सीको चन
मुद्रिर हों विनु चपानें ॥ २ ॥ सन्मुरखसर हे सहोस पानी
नाहीं पानु उव रोहो भाजे ॥ विरह जोगके तेज परमह
षमसिरन यह दुषसहे इराजे ॥ ३ ॥ ऊधो कहीं सो सांची
आनी व्रथा वहल पैकाजे ॥ न्यो जमुना जलमाहि सू
रप्रभु लीये वसन छुली कुलनलाजे ॥ ४ ॥ १०६ ॥ राग
धनाश्री कहा लोंकीजे वोहोतवडाई ॥ अति अगाध
यह वचन उचारत मनमानत हो न माई ॥ १ ॥ सपरेषव
रनहे नाहीं मनमानत हो न आई ॥ मानिर्गुन सों नेह
निरंतर क्यों निवहे री माई ॥ २ ॥ काव विनन तरंग चित्र

सू० बिनु मीन ते अब चितै चुराई ॥ मन हर लीयो माधुरी
२०॥ मूरति हो मरो मउर आई ॥३॥ स्याम सुभग तनं सुंद
र लोचन सूर निरखि बलि जाई ॥४॥१०१॥ राग म
लार गोपाल ही पाऊं तो जाऊं वह देस ॥ सींगी मुद्रा
कर षपर ले धरुं जोगन भेस ॥१॥ कंथा पहरों भस्म
स लगाऊं टाव दाऊं केस ॥ हरि मिलवे कों अलष
जगाऊं जैसें रंक महेस ॥२॥ तन मन ज्यारो षेह उडा
ऊं किर हाके उपदेस ॥ सूरदास बिनु सब जग सूनो
जैसें मणि बिनु सेस ॥३॥१०२॥ राग सारंग मीठी बा
तन में कहा लीजे ॥ जो हरि मिलै हमारे ऊधो कार
न कहो सोई कीजे ॥१॥ नाद सुगंध बनाय प्याला सुष
न नकी नी अरधंग ॥ तें मोहन कैसें रूप ब मस्त भा
व न अंग ॥२॥ लिव श्रवनन अपने कर कमल कर
सू न मूल पहराए ॥ बिन मोहन मारी के मुख मधु
र हाथ पठावे ॥३॥ एक समै जे नीच सांवन सौंप
चि सज बनाई ॥ आपे हो हिन जन्मो पोपर उ लेहे
न्याब कन्हाई ॥४॥ हम कहा करे नंद नंदन बिनु
तुम नाम मधुप मधु पाती ॥ सूरन हो यस्याम जे
मुष की तुम जाहु न मोसे आती ॥५॥१०३॥ राग सा
रंग ऊधो हम तबही जोग लीयो ॥ जा दिन तें हरि हां
सों मन मोहन मधुबन गवन कीयो ॥१॥ सुत ना २०।

लि दे मेलि सु अब हिं अवधि आधार धारे ॥ दर सन
पियासा गलत हे लोचन पत्र पसारे ॥२॥ बाधें
बेनु कहसींगी बिप सुमर सुमर गुन गावत ॥ यह पुर
तन चीर मेषला फिर फिर फेर बंदावत ॥३॥ रहत
न चित त उदास फिर न हे बन की धेन हि न रात ॥ रहे क
हा बन न तुरंग नातो सो सो अबन सुहात ॥४॥ भोग
भवन तें तजी भावत न बिरह वियोग बैराग ॥ मोर
मुकुट मुरलीन न पाउत यह रस ना अनुराग ॥५॥ दे
खत कौन जोग गिधाव जैसें जोग कह न जिहिं आयो ॥
कौन सिष्ठ तुम्हारे साध कहि न तुम यहां पठायो ॥६॥
परम गुरू रति नाथ हाथ सिर दीयो मं ऊपदेस ॥ चलु
र जोग पुरान पथ तें जो पकरो आदेस ॥७॥ जिहि तुम
को निज न ललषायो सो है हमारो ध्यान ॥ सूर
पांव कबहुं कर न हेरू दे तुम गरे ज्ञान ॥८॥१०४॥
राग केदारो ऊधो कहिरहो हे जोग ॥ कहा एके बाद बा
मो दे ष जो पी भोग ॥१॥ सीस सेली केंन मुद्रा सजे
ल ले न अप धुरि ॥ बिरह भस्म चढाय बेठी सहज कंथा
चीर ॥२॥ हृदे सींगी टेर लीनी जोग षपर हाथ ॥ चा
हे तेरी दरस भीषा दे हरी ना नाथ ॥३॥ जोग की
गति है साधी सूर देषि मोहे ॥ कहे नरहम सों जोग
करे ना जोग केसे होइ ॥४॥१०५॥ राग सारंग मधुकु

भ्र॰ रक ह्रौ संदेस सिधारो॥ बिनु उपदेस सहन न होंगो
२२॥ गसो धारिर ह्योव्रज मारो॥ ५॥ जा को ध्यान धरे गो
रीपति जोगी जगत न कह्यो यो॥ सो हम पिय मत स होउ
२ रसंतर नेकु नैर तरराया॥ २॥ यह ह उ घरे स प्या पुनि
ऊधो राखो हाँपि सबाको॥ सूर स्याम जानत हैं जो
यही जो निज मतो ह मारो॥ ३॥ ११२॥ केदारो॥ ऊ
धो जोग बिसर जिन जाहु॥ बांधो गांठि छुटि जिन
भि परिहै फिर पाछे पछताहु॥ १॥ एसी वस्तु अनूपम
ऊधो नाहिं न को उ लेकोर॥ ये जब नितनि कैन हीं
भाग जो तुमरे हृदय कठोर॥ २॥ जो हित करि ध
हे ये मन मोहन सो हम तुमकों दीनो॥ सूरदास जे
बिभचारि यर कहि के हरि ते वदन कीनो॥ ३॥ ११
छेदा॥ रागनूफली॥ तुम ज्या ये ऊधो गयि सहो
सी या दुष को म हे॥ ईऊ पिंड्र म्रग तु पाग साह्रे
पाऽणम न म्रग तु पा के म्हा हे॥ १॥ ऊधो स्याम ने के
ऊ निठुर नाह्यी स घा जिन के राके॥ घा हेऊ पर ली
ने लावत कोऊ न यह म लिपा व रे॥ २॥ ऊहु बस्या
म के गुन कहा व षा ने जल बसे तिन पल ली ये॥
सग षे लिलि लाप हम कें सो च पुपव इत नो दीये
॥ ऊधो ल कहि न बेउ कुब्जा सीरा सबे दा घन र च्यो
सोई रूप बिलोक माधो स्याय ग्रहे ब्रमत न सच्यो॥

४॥ ऊधो सरद स्रजनी ई है सोभा लाजत निकुंज न
गई॥ बांसुरी के शब्द सुनि सुनि बधक की मिरगी
भई॥ ५॥ ऊधो बसावरी बहु मदन मूरति हृदे माहें
रमिर ही॥ औरन तन न कछू न आवत कठिन प्रे
न छुड़कारि रही॥ ६॥ ऊधो हम भंवर भागिन कर्म
हीनी होस राखि लगाय है॥ पान पति सों ले ह
की जो चली लिखि आसो पा है है॥ ७॥ ऊधो हम न ना
यो जवतेर सो रन को सुपनो भयो॥ अंगुरी नख
गुर सर रेंखे जैसे हींयह ने न गयो॥ ८॥ ऊधो बेस को
की मेर कैसो छेह नो ज्ञाती कीयें॥ पान दीने हम
जगत जानत सुघ तो तुव आली ये॥ ९॥ ऊधो जो
ग जप तप ध्यान पूरो यह है नआवही॥ सुधार
स बिन स्वाद चाख्यो तिन में एोर भावही॥ १०॥
नेम धर्म और सो न पूरन हरि चरण निन के हियें
सूरप्रभु सें निठुर जे है फलकहा जिनके नियें
१॥ ११४॥ रागसारंग॥ पवनो धौर कटक कोप
यो॥ राजी मान रागप हं चान्यो जब निठुर मति
गायो॥ १॥ जोगी कहा होय पराना की लोचा ल हैं
तु पावे॥ जे सी जा के कुटिल बलि लपटाई ते सी चाल
चलावे॥ २॥ कुबजा लहें भई पटरानी तुम सेगये
चन्दीर॥ सूरदास ब्रज बनिता न कृपर चौंन पोंच उप

नीस॥४॥२५॥ रागजैतश्री॥ कमलनैन कान्हर को मु
रलि नैंनें नैंन नटरे॥ ऊधोऽपाये जोग सखा वनसो गेजा
लपरे॥१॥ नवमोहन गोधन लीयें आवत ग्वाल न सं
ग चरे॥ वलराऊ ओरसखा संग सब रहे कैसें विस
रे॥२॥ वंसीवर अनुनातर छांडे मुरलीऽधर धरें॥ सु
वहि समहि विनोद जो की नेकोइ नेवर नटरे॥३॥ व्र
जवासी सब नेपंड असीम वरसकाप मरे॥ सूरदास के
प्रभु बिनु ऊधो कोसं ताप हरे॥४॥२६॥ सारंग॥ ऊ
धो तुम यह समति ले आये॥ ए कहि मजरी खिजावन का
रन मानो सो खेपठाये॥१॥ तुम जु जनके वेना थ तुमारे
मान एक करकमाओ॥ मित्र के मित्र सजन के स जनना
ले कहन पुकारी॥२॥ ऐसे मुनि मधुप जरत हैं अब ना
परहुं षत कहा मानें॥ निपट गवार होय जो सव जा
नै वात न माने॥३॥ हम मति विकरी सूर के प्रभु सांवरो
मन न सुहाई॥ उलटि जोहु प्रभु नेम नही सोइ रद
हि करत नराई॥४॥२७॥ धनाश्री॥ ऊधो ये तुम ब
डे व्योपारी॥ लेप आइ जो रान के कीय जमें पानि उ
तारी॥१॥ फाटिक हीये अटक न ही मांनें सूल्यो फि
रत अनारी॥ षोटो षपो है कछू न तहैं लिये
फिरत निसिर भारी॥२॥ इनके कहे कान्ह वहके गोले
सो कोंन अनारी॥ आपनो हूं धंदूं धरहि को पीवे

सकारी कूप को भारी॥३॥ गोरस ले जाहु वहां कुवजा है तहां
न फाकछू आवे॥ सो है हो मागें हमें देंहि सूर जो स्याम
हि आन मिलावे॥४॥२८॥ राग मार॥ हम तो दे
कू मांति सुष पायो॥ जो गोपाल न मिलते तो नीके मना
तर जग जैसगायो॥१॥ कहां हम या गोकुल की ग्वा
री वरन हीन लघु जाती॥ कहां वे श्री कमला के ना
थ कमिलि वैठेहक पाति॥२॥ निगम ध्यान मुनि ध्या
न अगोचर ते भए घोष निवासी॥ इनने परत कहां व कु
प्रतेहै मुत के कोन के कोउ हासी॥३॥ जोग कथा पा लागे
ऊधो मति कहो वारंवार॥ सूरस्याम तजि और भजे
जो ताकी जेनो छार॥४॥२९॥ राग गोरी॥ एसी वा
त कहो जिन ऊधो॥ कमल नैन की आंधि करत है
वचन न वोलत सूधो॥१॥ वात न ही उहि आइ न्यो॥
सो नाहि न हन फाची॥ मन वच कर्म साध सब रह
यो नंदनंदन रंग राची॥२॥ या लागो मोर्ई अवव
जो निरे हृदय को सूल॥ श्रीमुरलीधर आनि मिला
वो पहेरें पीत दुकूल॥३॥ इन वातन तुम भेय स्याम
न न मिलत लहे गरि थों लौ॥ सूरवचन सुनि रहो
घ षेपों से षो होरन आयो वेली॥४॥३०॥ सारंग॥
विलग जिन मानो ऊधव प्यारे॥ वहम पुरा का जर
को चन गोजे आवे ते कारे॥१॥ तुम कारे सुफलक

सुत काहे कारे मधुप सवारे ॥ स्याम सुंदर को
कोन चलावे सब तें न मन हि सो धारे ॥ ३ ॥ मानो
नी तुम मारी के काहे ग्यान ग्यान पधारे ॥ तातें स्या
म न घोम प्रभु नातें लेस्यां स्याम गुन न्यारे ॥ ४ ॥ २१
रागनट ॥ ऊधो तुम सब साथी मोरे ॥ मिलग
न मानो कहा है मारी के बिउरि सलें मोरे ॥ १ ॥ से
सु कूर सुनो कतउन केरी तें भरि भरि दोरे ॥ बे
घन स्याम स्याम घट अंतर स्याम कमेंवोरे
२ ॥ ते नो वह जैनि निर्गुन गुन जिन के देख ष कट के नि
छोरे ॥ सूरदास काहे को संगति जो जाहि है सब
जोरे ॥ ३ ॥ २२ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो वह हम पै कहा सुग
वत ॥ पसुपछी सुरभी सब ब्रज के वो होत न भाषि
दुख पावत ॥ १ ॥ बनन चरन ग सुत नही बा
तें बन बन ढूंढत डोलत ॥ बालक किलकि बोलतें अ
हि बिहग मग महा भय पान षग बोलत ॥ २ ॥ जमुना म
दु स्याम स्याम बिनु देदु छबि धरी गोपे तनु रस १
च पुष न सभारत बिरह बिथा मे जोगी ॥ ३ ॥
पंगि कुल के जोग दूषित सब नारि बिनाजि ग
मीन ॥ सूरदास प्रभु नें न न धूल ल छबि सबस
लोलीन ॥ ४ ॥ २३ ॥ रागसारंग ॥ जोग फी बात सु
न तु मेरे संग आगव है ॥ सुलगत लगन हम मरत

हो तुम मधुप कहत हे ॥ १ ॥ जोग कुबजा कूबरी को सो हें
न तुम्ह हे ॥ सिर हि बिनु का न सुषरियत सुनि चोले
न है ॥ ध्यान तें बहुत रत न मूरत चिबि बिधि लपतई ॥ ३
सूम भूमा पाय कै पावै तें सोम कलसिहू भई ॥ ३ ॥ २४
रागसारंग ॥ रे मधुलिक हम सिषावन आयो ॥ ये तो
मेन स्याम सुमार के होन सुन तप रायो ॥ १ ॥ जोग लु
गन सु मन के कूब जो नें प्यारे तुम मारे होंन ॥ सब को मो
न मोहि मोहन मूरति तासों मन सपरसांव ॥ २ ॥ मली
मई तुम आए ऊधो रे घोट मति बिचारी ॥ दे हु उपाय
मिलाय सूर प्रभु सारत हरी हमारी ॥ ३ ॥ २५ ॥ रा
गसोरठ ॥ इमि हो स्याम भुजंगम कारे ॥ मली गई क्यों
तुम पावे वेह न लषो हमारे ॥ १ ॥ मंत्रन फुरे तब नहीं
नागर गुनी सबे पचि हारे ॥ हम बहु स्याम मेनन म
रिदे छोग योग मंत्र सिर हारे ॥ २ ॥ बिरह बिथा तन अ
धिक रहत नहि सो तुम पठ ये सुर नेमारे ॥ रूपा कौवे गगारु
जोवें नेवी यावि षहरतु नारे ॥ ३ ॥ नव यह लहर सेमु
इन की उनरे तब हरि वेद हुंकारे ॥ सूरदास गिर
धर जो आवे हम सिर गारुडी हारे ॥ ४ ॥ २६ ॥ रागसो
रठ ॥ मधुकर यह आरे न की रीति ॥ मद चेरहुर प
राये सब सुक ते कपट की प्रीति ॥ १ ॥ ते सें मधुक
र पो है ये जा सुले रहत अधिक रसि मान ॥ दिन

बरतुहे सुनत उठि बैठत फिरि न करत पहचान ॥ २
मदन भुजंग पिटारें पाल्यो जैसें मन्त्रो ता न ॥ कु
लकर नूतन तजत नाक बहूं सुनत काढि मगि मात
३॥ कोकिल काकु कुरंग स्याम घन हूमें नरहे सें आमे
सूरदास अनुहार स्याम की फिरि फिरि सुरत करा
में ॥ ४॥ २७॥ राग सारंग मधुकर आपने हो इवि राम
ने ॥ बाहिर ते जो हित कहि यावत भीतर काज
स याने ॥ १॥ ज्यो सुक पिंजर मांहि उचारत जो गोकु
ल बखाने ॥ छूटत ही उड़ि मिलत अपुने कुल प्री
ति न पटहि गाने ॥ २॥ यद्यपि मन न रहीत जतन ने
हरत यद्यपि फपहचाने ॥ सूरदास प्रभु कोन काज
ज्यो मांखी मधु लपटाने ॥ ३॥ २८॥ राग केदारो म
धुप बिराने लोग बटाऊ ॥ दिन दस रहे आपुने
स्वारथ फिर मिलत नै ने काहू ॥ १॥ मधुप मसिहू
म कीरे पठये पाये जोग सिखाये ॥ हम जोग
जोग कूबजा कूं याकुं लेहि यह सुभा ॥ २॥ कहे
के सें हरि रहे बरजि कोन उपाऊ ॥ सूरदास प्रभु
तन मन ले सख्यो मानत हो कोउ आउ ॥ ३॥ २९॥ राग
सारंग सब जग तजे नेह के नाते ॥ चातक स्वाति बूंद
नही छाडत प्रीत सुत सुनत नाते ॥ १॥ सब कुंजे मीन
छीर की रति जीवत छाडि नहू तरत ॥ सुनत

कुरंग नाद रस पूरन जदपि व्याधि सर मारत ॥ २॥ नि
मिष चकोर पखि क नहीं भावत मसि दे खे जुग बीते
लो पत गरे हि विध सुमरत भयन प्रेम घट रीते ॥ ३॥ सु
व अलि कि निमि मर ने वे बाते करी सगम ज राजा ॥ ने
धी सूर स्याम छांडि किन एक दे हूके काजे ॥ ४॥ ३०॥ रा
ग सारंग मधुप कहा जानत नाहीं बात ॥ फूंक फूंके ही
ये हूले गावन ऊइ न रहत हाते गात ॥ १॥ हम मघट बस
त अंबरो जान रहत निर्गुन कहा समात ॥ तुम कि
नारी रेन कुसम लो पान करन निकिन पात ॥ २॥ यद्यपि
सकल बेलि बन विहरत बस्तु श्यान मेल जात ॥ ३
१॥ राग नट ॥ मधुकर बहू हितन लागे काहे ॥ दि
स चित बचन पल कन लावत विरह सूनि तके दाहे
नि मस हिनें मन नि विपति सरस न कहियत है
माहें ॥ उर ने निकसि करत कि न सीतल जोये अ
सूर दाहें ॥ १॥ पालागें मैसें ईर हूर ने घो प्रबधन्या
स ज्ञान न चाहें ॥ जिन हमसो लेनिर्गुन सिधु में बोहे
र न पोहीं चो चाहें ॥ २॥ जा सो उपजी प्रीति निरंतर
ता सों बनें निभाहें ॥ सूर कहा ले करे पपैया मेरे नो
सर समरि ताहें ॥ ४॥ ३२॥ राग नट ॥ ऊधो जाके माथे भा
ग ॥ तिल कत छांडि सकल गोपी जन चेरी चपल सुहा
ग ॥ १॥ डारी जोग की बेलि लगावन का रिपम को ब

ग॥ कुबजा कौं पटरानी कीनी हमें दैं तैं बैराग॥ १
लोटी की जरठौंडी बाजी बढ्यो स्याम अनुराग॥
निलज भए अवके रोऊ खेलत बारहमासी फाग २
गोरी भली बनी अब उनके रानी हंस सुगर काग
सूरदास प्रभु इहै ओछिकें चतुर चकोरत आग
ध॥ ३॥ राग सारंग ऊधौ वे हरि हैं हितू हमारे॥ वेरा
नाहे रहैं मधुपुरी रासी संग दुलारे॥ १॥ तब लग
आस हुती जीवन की सुनेन वचन तुम्हारे॥ कह
तहो रूप ध्यान उर अंतर जोग जुगत कमि धा
रे॥ २॥ रूप अभिमान जानि छांडे व जरे के ईही
रविचारे॥ ॥ मा स्नो कंस राज कुबजा के सूरक
हावत भोरे॥ ३॥ ४॥ राग सारंग॥ जिन चलो अलि बा
त बराई॥ नाके रू सुनत नम मुरक्षत श्रवणों बि
ते गाव तहुहू राई॥ १॥ पाये समाचार सबै बि
रे मिलत तुम सों आरत बिसराई॥ मे लोग
बस भली होत मति भली जो बसिहू चाने कराइ
२॥ मीठी कथा कटुक लागत अति जो उर
उपहैल बराई॥ उलटो न्याव सूर के प्रभु को बह
जात माग तउ नराई॥ ३॥ ५॥ राग मलार॥ ऐसो सु
नक धूकहत न हमावे॥ सिरपरसो तहमारे कुँ
बजा चाम के दाम चलावे॥ १॥ कितेक दूर गोकु

लते मधुपुरि लिखि लिखि जोग पठावे॥ ताही के रंग
रचे सामरे क्यों कम्यो चेठ पठावे॥ २॥ कछु कमंत्र की
यो बरुन में ताते स्याम भावे॥ नटतौ लोक रनीपे तु
कुदिया कपि जो नाचन चाबे॥ ३॥ नव सब कहे अस
र कौ रासो रूप बकुल बधू कहावे॥ सूरदास प्रभु
हकहि नतह उरलो न लगावे॥ ४॥ ६॥ राग
मलार स्याम कंचन बीवि वेधो ब्रजवासी॥ इहं घरा न
कहं घोष रही छिन छिन कुबजा विलासी॥ १॥ कुबजा पति
पाके मन मोहन मानो नप की यो कासी॥ सूर स्या
म को रज्जु रुचि देसों एक कटु घट जेहासी॥ २॥ ३॥ ७॥ रा
ग मलार॥ मधुकर नायक होय करि मेरो॥ पति रवसन ते
न स्याम बाग के करि गए तन परहें नेरो॥ १॥ याब्रज के उ
पैहं मन लायक कोऊ सुर ह्वाकारि डेरो॥ ऐतेन मानत
सीषमहू सब छाउ न नाही घेरो॥ २॥ ऐसो बान कहे
रहूं हम सों ह्वेय जो कहि वे लायक॥ सहान सो दा
सुरह मारो छिनु छिनु मति सुषदायक॥ ३॥ गोवू
पो हम पराग छांडि के कैरहं पानि विश्वास॥ तो हम
सूरपहा करहें येनि मधन छांडे पास॥ ४॥ ८॥ रा
ग मलार॥ सषी री पूरन ताह मजानी॥ या ही नेंह
तु मान करत हं वर हस्त से रूप गवानी॥ १॥ रूपवते
रा जरी तस सुनियत हैं कुबजा सों पटरानी॥ सघन

भो·
२६

गायचरावनजातसंगभयेधाछुकेहानी ॥४॥ मन
हरलीनोवजायवासुरीउवैद्हैवैठेहानी ॥ माल
महामारतमनमोहनऔरनहीसंगआनी ॥३॥
रुपईनिसाअजेनारसंगलेवनवसिसीसाठानी
सूरदासहमसकलपतिहिकहेकोनअवमानो
॥४॥३९॥ रागसारंग सषीरीस्यामसवेइकसार
मदनगुपालमधुपुरीविलसेंगावतसगरवचा
र ॥१॥ विरहकठिनलाग्योउरअंतरदेविरहदे
विचार ॥ अवकाह्नकोरोषकहाहेपायोलिख्यो
लिलार ॥२॥ कारी२घटादेषवादरकोसोभारे
तरअपार ॥ सूरदाससरितासवउमगीचातकक
रतपुकार ॥३॥४०॥ रागसारंग तिनेनपतीजेरीजे
वीरतिनहीमावें ॥ ज्योंअंगरसवाधिवाहिके
महानाघतहोनोतसमजावें ॥१॥ कोइलेकागकार
कहाकीनोमिलेकुलेजवमएमयाके ॥ मोरजो
तभईनंदमहरकोमधुवनतेअधवआवें
॥२॥ तवलीभ्रमविचारकीनोहमनकहाअववेकेप
धितावें ॥ सूरदासजोमनवेकेवोटेओसरपरेमा
यपरकावे ॥३॥४१॥ रागकल्याण कहाजोकुमानें
रीपरफेर ॥ नंदनंदनकेविछुरेमजनीजेहितहो
लगनसरीर ॥१॥ कहिकहिकवामधुवनमतुग

२६

वतक्योधरेमनधीर ॥ कैसेकोनवेनिसमुझावत
विनुदेषेंहरिनीर ॥४॥ जोगसमाधिकहाहमजानें
वेनवासीकेउरहार ॥ सोईकरोजोमिलैसूरप्रभु
वहुतरंगगनतीर ॥५॥४२॥ रागधनाश्री ऊधोजोग
कहैलैकीजे ॥ ऐसोहियतकोधोविधायतुहेकी
धोवसुसिषेकेरी ॥१॥ कीधोकछूविलोकोनामु
हरकेकछुवनीको ॥ हमरेनंदनंदनजोचाहिय
मोहनजीवनजीको ॥२॥ तुमजोकहतनिर्गु
नगिरनरनिगममंत्रनेहरीति ॥ सगरस्रूपकीरास
मनोहरछाडेंक्योपरतीत ॥३॥ गायपछुचरावनज
येघोषतेंघुहिरेनेफिरस्पावते ॥ कोईसूरसहाय
हमरीवेनरसालवनावत ॥४॥४३॥ राग नेर ॥ऊ
धोजोगलिषिवहिहमजान्यो ॥ जादिनतेंसुफलकसु
तकेसंगरथव्रजनाथपलान्यो ॥१॥ जादिनतेंहम
मछाडीमोहनसुतपतिनेहभुलान्यो ॥ तजिमाय
पसेलसकलसुषमजजुवतिनमनठान्यो ॥२॥
नंदनमुरलीधरसुंदरवहीरूपउरआन्यो ॥ व
हजोगजोगीजनभूलेसोतुमसुषहीवषान्यो
॥३॥ अक्षरधरावेजेपावेतिनहूनहीपहचान्यो ॥
सूरवेहनिजरूपस्यामकोहृदयेमकरूसमान्यो
॥४॥४४॥ रागकेदार मधुकरस्यामहमारेचोर ॥ मन

www.vallabhacharyaagraphara.org

प्र॰ नहरलीयोतनकुचितवनमेंनिरखनेनकीकोर॥१॥
२७॥ पकरेहुनेहदेउरअंतरप्रेमप्रीतकेजोर॥गयेछुट
यतुरतसवफंदनेंगयेअसनछकोर॥२॥चंचल
रीजागतनिसवीतीदूतमिल्योएकभोर॥सूरदास
प्रभुसबसुखलूटेनागरनंदकिसोर॥३॥५४॥राग
सारंगअपुनेस्वारथकेसबकोऊ॥चुपकररहोम
धुपलंपटचीन्हेंवेतुमकोऊ॥१॥लीयेंफिरतजोग
जुवतिनकोंबडेसयानेकोऊ॥तेरेकधूंसंदेसकहे
हेकहिनिवरोअवसोऊ॥२॥मिटगयोमानपरेखोसज
नीहुहेमारुतुमजोऊ॥तवकाहेकोंरासिविलसाईंजो
हयखानहुतोऊ॥३॥अबहमरेजीययहआवतहेहे
मीहोयसोहोऊ॥सूरस्यामगोकुलकेनायकचितवि
तोकिनखोऊ॥४॥५६॥रागमलाजोयेकोकविर
हकेहुबनाने॥तोतजिसगुनमाधुरीमूरतिवेतनम
देसजाने॥१॥कुमुदचकोरमुदितविधुनिरखसकह
सदं करेलेभाने॥चात्रकस्वातिकोंचाहतनतहांति
विनुपाने॥२॥भोरकुरंगनागकेपनकाकविज
नकपटबखाने।सूरदाससबसुजोदीजेफारेभनतहे
ममाने॥३॥५७॥रागमलार॥मधुकरयहांनाहिम
नमेरो॥गयोबहसंगनंदनंदनकेबहुरनकीनोफेरो
१॥उनविनतनन।मुक्तिस्यानमोलैलैकीअपुनोचे २७

रो॥जोजाकेवसपरयोसोताकोहेविसरयोवासुवसे
रो॥२॥नीनेफिरनसुरविथनमेंकोकूनपूछतकेरो
जोन्योपरतस्योसिधारोऊधोलेनिरगुनमतिनोरो
३॥५८॥रागसारंगऊधोहरिकाहेकेअंतरयामी
जोनहींआवतमिलतनहेंहेअोसरअबधवतावत
लामी॥१॥अपुनीचोपआयउहिबेठतिअलिजे
ससोकामी॥तेकहाजानेपीरपराईजेहेपाह
गामी॥२॥आईउचलप्रीतिकलईसोजेसेंरक
सोकामी॥सूरदासअपनेमेरियतनेहेंजेसीउदव
वसतमामी॥३॥५९॥रागधनाश्रीवरउनकुवन
मलोकीयो॥सुनिसुनिसमाचारऊधोअधि
कसिहातहियो॥१॥जाकोगुनअोरनामरूपहू
मिहरयोसोफिरनदीयो॥तिनअपुनोमनहरत
नजान्योहसिहसिलोगजियो॥२॥वेरीतनेचर
नचरायवेंश्रीपतिवसुजुगीयो॥सूरसकेलना
गरनागरसोंदासीदावलीयो॥४॥६०॥रागमला
ऊधोहमनहीजान्योस्यामहि॥सेवांकरीउनअोरें भरत
गरुजातकुलनामहि॥तनमनचोरतप्रीतिजो
तोरेकोंनभलाईतामहि॥तोकहाजाननपीरप
राईतुधारअपुनेकामहि॥२॥चातकसदाचार
नजोसेवेदुषितविनाजलपानहि॥सूरदासप्र

सूरपति यह कीनी ख्यो कूबरी धाम महि ॥७॥५२॥राग
सारंग॥ ऊधो हरि यह कहा कीयो॥ राग काज चित
दीयो सांवरे निज गोकुल विसरयो॥१॥ हम सों वे हो
त वेरी ब्रजनाथ कोटिक राजकुमारी॥ कहा पाये
हैं नंदनंदन दासी जसुधा सी महतारी॥२॥ किंव गिर
धारयो इंदु षमे सो कितेव सुषउपजाये॥ उपव
नंद की निठुर भये अबलनि पर लिषलिष जोग पठा
ये॥३॥ परम प्रवीन सकल जानत हो तातें यह ब
हि आये॥ अपनी कीन्ह लावे सूरज मात पिता वि
राये॥४॥५३॥ रागसारंग॥ प्रीत बांह्स के ऊ न ही जा
वत॥ तूले चालत कहत खुलि ऐसी विथा नहीं पह
चानत॥१॥ जो जो पास ब्रज में घर घर ते दूध दही ले
खात॥ जे अब वे हैं देत ब्रजवासी न निठुर भये पुर
जात॥२॥ सूर कुटिलता जे सुनियत हैं लोग पुरा
तन गात॥ नषसिष लों विसर अब सात सब मधु
बन नाम कहात॥३॥५३॥ रागमालव॥ ऊधो गो
वन तुमारो ऊधो॥ जाने कहा राजगति लीला सं
त यही र विचारो॥१॥ भली भई हम सब ऐ सुख ला
की कुवजा सों मन मान्यो॥ कहि कहा लाज के॥
मारें आवन नहीं सिरयानो॥२॥ ऊधो जाहु बांह गहि
लावे सुंदर स्याम पियारो॥ व्याहो बीस धरो दस

कुवजा अंत है कान्ह हमारो॥३॥ सुनरी सषी अहू
नहीं कीये माधव आवन दीजै॥ सूरस्याम अब
मिलें सजनी हम कि व कर कर जीजे॥४॥५४॥राग
सारंग॥ मोहे कोऊ रोक तिहो मारग सूधो॥ सुनि म
धुकर निरगुन कंटक में राजपथ क्यों रूंधो॥१॥ के
तुम सीष पठये कुवजा कि केहू स्याम घन हूं धो
बे तुरा नस मीति कि न देख्यो सुबलित जो ग कहूं
को॥२॥ ता को कहा परेषो कीजे जाने छाछ न दूधो
सूर मूर अक्रूर लेगये व्याज निबेरत ऊधो॥३॥५५॥
रागमालव॥ बनि यवन सब कोउ सम भावे॥ तासों
नहीं कोउ है प्रीत मिले मन जा थनि ना वे॥१॥ एक
योग कपट के वातनि निर्गुन ग्यान बतावे॥ स
गुन मोर स्याम मनोहर नैन निमख दिषावे॥२
ग्यान ध्यान के भेद न जाने चतुरन चतुर कहा
वे॥ सूरदास सब कहू कै सुपुत्र को ही हित भावे॥३
५६॥ रागमल्हार॥ उनको तन कों परतीत करे॥ जो
अब कमलनैन सूरत नजि निर्गुन ध्यान धरे॥१॥
जो मानि कहें तब दे जुगवींत रूप रेष बिंदु जानें
सो मनि कहे तब सूत जुवतिन सों नाहि लो दूर परम मा
नें॥२॥ जो हरि सब कमन देव मुनि चितति ध्यान पर
कव ही पावत॥ सो ईर सिक सूर गोपगन नस

गलेकरमुरलीगावत ॥ ३ ॥ २१ ॥ धनाश्री ॥ मधु
कर हम ब्रजजीवन मति भोरी ॥ यह मति जाय जहां
उपदेसो नागर नवल किसोरी ॥ १ ॥ कंचन कोम
ग कौने देख्यौ किन गहि बांध्यौ डोरी ॥ कहि धौं म
घत वारि ते माखन वंधौ भरी कमोरी ॥ २ ॥ विन ही
भीत चित्र किन कीनो किन नभ बांध्यो झोरी ॥
कहो कौन पे कढ़त कनूका जिन हे विभूसों पिछो
री ॥ ३ ॥ निरगुन ज्ञान तुमारो ऊधौ हम अबला म
ति थोरी ॥ चाहत सूर स्याम घन चंदहि अंखियां
लगन चकोरी ॥ ४ ॥ २२ ॥ रा. बिहाग मैं नंदनंदन नंदन
सों कथ्यो न कह्यो ॥ सुनि ऊधौ हरि यह कह्यो कीनी
जाय मधुपुरी वसनूर ह्यो ॥ १ ॥ चलत कह्यो हों ऐ
है न आवन मोहि श्याम सग ह्यो ॥ सूरति ये सों भर
नैहन सों प्रवन हि जात सह्यो ॥ २ ॥ ध [illegible]
कोपी सुनो हरि संदेस ॥ कहि समझाय प्रातगति
ये तो यह उतके उपदेस ॥ १ ॥ वे अघगासि पूरन प्रति वि
नासी घट घट रहे समाय ॥ तत्व ज्ञान बिन मुक्ति
न पैहो वेद पुरानन गाय ॥ २ ॥ सगुन छांड निरगु
न को ध्यावो इक मन हरि चित लाय ॥ यह उपाय
करि बिरह तरोगी मिलि है ब्रज सो जाय ॥ ३ ॥ सुनि
संदेस दुसह माधव के गोपी विकल बानी ॥ सूर २८

व.लो

बिरह समुद्र में बैयो प्रतिनें नरुवल प्रीति पानी ॥ ४
ई ॥ रा. सारं नहिं हम निरगुन सों पहचान ॥ म
नमन सार सरूप सिंधु में रही प्रपन पो सान ॥ १ ॥ य
घपि ज्ञान उपदेसो ऊधौ पूरन ज्ञान बखान ॥ चित
ते बिरह मिटे न मोहन की चितवन मुरि मुसिकान
॥ २ ॥ गुन गांस नेह अंतर नंदन सों लगि पति सुतन कुल
कान ॥ सुनत नहीं सह हम सूरज प्रभु दुखसुख सु
ख जान कान्हे ऊधौ हांन ॥ ३ ॥ २३ ॥ धनाश्री आन के सा
थ मिल होऊ ॥ तब ले भजे जैसो जैसे हु पाव सपरे
से को हु ॥ १ ॥ मेरो वचन सत्य करमानो छांडो सब
सो मोहु ॥ तब लौं सब पानी की चुपरी जौ लौं गो सान
न नहीं दूई ॥ २ ॥ रे मधुप वात रस सों प्रवव सों कहि ह्या
वे तो ई ॥ सूर सु बस्ती छांडि पवन सुर हम बलाय
धोई ॥ ३ ॥ २१ ॥ रा. गनाश्री ऊधौ ई नैन नितें पतियो
नंदनंदन तें पलि भ्रमत लौ योरी सतसी यों नाहीं
बियो ॥ १ ॥ नंदनंद ओर स्याति जो चातक जैसे पा
ह्यो हियो ॥ रे से ईंइन आखिन एक टक रहि ब सो
घ मजु फीयो ॥ २ ॥ यद्यपि तुम रहहो लोके गम
धुव तहुं विनकी यो ॥ हरि मुख कमल लखो मीर सस
रज चाहत लाहि पियो ॥ ३ ॥ ६ ॥ रा. गनेर ॥ हरि
मुख निरखि निमेख विसारे ॥ तादिन तें विसप्रेरि

भ्रं०
३०॥

गं वर हू नैननि के तारे ॥१॥ तजी सीष सब सासु स-
सुर की लाज काज सब जारे ॥ घूंघट घर छाडे वन वि-
चरत संगे रहत उघारे ॥२॥ सहज समाधि रूप रस
भ्ररन ध्यान ते टरत न टारे ॥ तिनके बीच बिघन
करवे को मात पिता पचि हारे ॥३॥ कहत सुनत स-
कुत है नाही ऊधो वचन निहारे ॥ सूरदास इक टक
मन राषत लोचन चहे हमारे ॥४॥ ॥ धं ॥ राग सारंग
औरस कल अंगन ते उद्धव अषियां अतिहि दुखारी
अतिही पिरात सिरात न हरि बिनु अनेक जतन क-
रि हारी ॥१॥ मग जोवत पलको नही लावत विरह
विकल भई भारी ॥ भर गई बिरह बियार दरस बि-
न निस दिन रहति उघारी ॥२॥ स ॥ अलि अपने
गान सिलाकों के सें सकत सहारी ॥ सूर जो अंजन
अपाजि हरस रस आरत हम रोग मारी ॥४॥ धं ॥ राग का-
रे ग ॥ बिनु गोपाल बेरन भई कुंजे ॥ तव वे लता ल-
गत अति सीतल अब भई विषम ज्वाल की पुंजे ॥
वृथा वोहीत जमुना षेवो लत वृथा कमल फूले
अलि गुंजे ॥ पवन पानं घन सार सजीवन दधि सु-
त कीरन भांन भई भुंजे ॥२॥ ए ऊधो कहियो माध-
व सों विरहे मदन ही माहत कुविलुंजे ॥ सूरदास प्रभु
को मग जोवत अषियां भई बरन ज्यों गुंजे ॥३॥ ६६॥

३०॥

राग रामक॰ ऊधो जाहु तुमें हम जाने ॥ स्याम तुमें
ह्यां नाहि पठाए तुम हो बीच भुलाने ॥ ब्रजवासि-
नकों जोग कहत वातन न कहत लजाने ॥ वडे लोग न
विवेक तुमारे ऐसे भए सयाने ॥२॥ हम सों कही
लई सो सहिकें जिय गुन लेहु अयाने ॥ सूर स्याम त-
ब तुम्है पठाए ये वने कहुं मुलि काने ॥३॥ ६७॥ रा-
ग धनाश्री ॥ कै तुम स्याम सषा हो साचे ॥ कै व-
रि जोग सवाग बाचहिते वे से ई लागत कांचे ॥
जैसो कहीहि यसों आवत हीं धीरज काहि पठला-
ने ॥ अप नो पति तज और वताबत महिमानी कछु
षाते ॥२॥ तुरत गवन कीजे मधुवन कूं इहां कहां
तु मुस्काये ॥ सूर सुनत गोपिन की वानी ऊधो सीस
नवाये ॥३॥ ६८॥ राग रामकली ॥ ऊधो वेग मधु-
वन जाउ ॥ जोग लेहु संभार आपुनो बेचिये जहां ला-
हु ॥१॥ हम विरहनी नारि हरि बिनु कोंन करे निरवा-
हु ॥ तहा दीजे मूल पुजे जहां फातु म धाहु ॥२॥ ह-
हां नहीं ब्रज में विकेहै नगर नारी साहु ॥ सूर वे सु-
व सुनत लेहें जियन कछू पाछि लाहु ॥३॥ ६९॥ रा-
ग न ॥ उद्धव कछू कसन परी ॥ तुम जो हम वे-
जोग लाए भली कृपा करी ॥१॥ एक विरहे जरि रही
हरि बिनु सुनत अतिहि वरी ॥ जाहु जिन अपकों

श्री न उभो है देषत मुहीं डरी ॥२॥ जो मफाती दई तुम क
३१॥ र षडे ज्ञान न हरी ॥ आनि अकास निरास कीनी सूर
सुनि है हारी ॥३॥७०॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो सु
न ते निहारे बोल ॥ ना एह हरि कुस लात धन्य तु
म पर घर पालो तोल ॥१॥ कहै छीक हू करे हम मो
रे वरि उ हि जे है सो ल ॥ सुपा वत ही या को बहु वा
न्यो ति पट ही ठेपो छोलो ल ॥२॥ जिन केस मा बा
र कहै ते हे ते वहु हु गुनन रूप मोल ॥ जानी जा त
सूर हम इनकी वचन चलन वचल ल्यो ल ॥३॥७१
राग धनाश्री ॥ ऊधो जान परी सयान ॥ नारि
यन को जोग स्याए भले जानि सुजान ॥१॥ नि
गम कहि न पायो कहै तजासों ज्ञान ॥ नैन
कुटी मोर संगम जहे चार तउ न मान ॥ सेवन ग
र घर बरस न निहारत मन नही गयो मार ॥ सौरि
सो मन ह्यां पन्ना हीं गयो संग लिसार ॥३॥७२॥
राग रामकली ॥ ऊधो मन नहीं हाथ हमारे
रथ चढाय हरि संग ले गये मधुरा जहां सिधारे
॥१॥ नातर कहा जोग हम छांडे अति रुचि कै तुम
ल्याये ॥ हम तो झकत स्याम की करनी मन ले
जोग पठाये ॥२॥ अजहू मन अपनो या में तु
मसे होई तो होई ॥ सूर सपथ हमें कोटि तिहा ३१॥

हम

री तुम कहो करे मैं सोई ॥३॥७३॥ राग धनाश्री
ऊधव जोग सुन्यो हम दुर्लभ ॥ अपुन कहत सुन
त मधु ऐसे ते तुम जानत हो सुलभ ॥१॥ रेषन रू
प बरन जाके नही जा को हम हि बतावत ॥ अपु
नी कहो दरस वैसे को तुम हूं कबहू पावत ॥२॥ मुर
ली अधर धरत है सो पुनि गो धन बन बन चार
त ॥ नैन बिसाल बंक भोंहन करि देख्यो कबहूं नि
हारत ॥३॥ तन त्रिभंग करि नटवरवपु धर पीता
म्बर तिहि सोहत ॥ सूर स्याम जो देत हमें सुष सो
तुम को सहु मोहत ॥४॥७४॥ राग रामकली
ऊधो कहा कथित विपरीत ॥ जुवतिन जोग सि
षावन आये यह तो उलटी रीति ॥१॥ जो तन धे
नु दुह तव पय बछ को करन लगे जो अनीत ॥ च
क्रवाक ससि को कहा जाने रवि चकोर कहा
प्रीत ॥२॥ पहन न तरै साल जो बूडे तो हम मानें
नीत ॥ सूर स्याम प्रति अंग माधुरी रही गोपि
का जीति ॥३॥७५॥ राग बसंत ॥ ऊधो जुवति
न ओर निहारो ॥ तब यह जोग मोट हम आ
गें यह समझ विस्तारो ॥१॥ जे कच स्याम आपुने
कर करि नित है सुगंध रचाये ॥ तिनकों तुम जो
नु भूत घो रिके जटा लगावन आपारो ॥२॥ ना हि सु

श्री०
२२॥

सब रंग महरम लय चोरि के छिन छिन धोवत मांज
न ॥ नहि मुख कहत षेह त्रप राव न सो के मैं हमें
छाजत ॥३॥ लोचन नउ पाजि स्याम मुख रस सन न
व य हहीं यो लिपाली ॥ सूर लिन तुम रवि हर मा
खत यह सुनि करउ पाली ॥४॥७६॥ राग विहाग
रो ॥ उद्धव नैन नि यह ब्रत लीनो ॥ स्यो लिवि नारू
सर सव भरि यत नयो वर धुन न कीनो ॥१॥ मुरली
गर जत लत मुक्तालन मेघ ध्यावन मल हीनो ॥
षरु एमान गोइ स्सें ही व निदें हि वो हीनो ॥२॥
तुम न्ह पाये ले आगसि वचन सुनत महा दुष की
नो ॥ के मैं सूर ग्रंग गोचर लहि ये अगम ने काव
लखी नो ॥३॥७७॥ राग सारंग ॥ ऊधो इन नैन नि
अंजन न देहु ॥ आनौ क्यों न स्याम रंग काजर नी
र ज स्यो भरे हु ॥१॥ चपल रहत निरवा सर
मधुकर नहीं सुहावत ये हु ॥ ऐसे मीन मध्य जोत
चिधुरत न कहा करो हुष लहु ॥ सख घुमान
न उटन के काछ्यो धरि के पूर जो जेहु ॥ वार कमि
लहु स्याम सुंदर को क्यों न जोगत जस लेहु ॥२॥
७८॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मन माने की वात ॥ जैर
न पद लेत दीपक में परिके आर पिपि सिपिरि लप
दात ॥१॥ हरत न चकोर को हो मिमिं मधु तुरा मसि

श्री
२२॥

अक स भर मात ॥ हसो ओंन धरयो हरि जी पे छि
भइत उत नहीं जात ॥२॥ दादुर हलैं जल भीतर कम
लैं नहीं अरात ॥ काठि को रि घर करत मधुप जो ॥
वधे कमल के पात ॥३॥ वरषा वरषत निसु दिन
ऊधो यो हि मी पुर उपघात ॥ स्वांति वूंद को काज प
पैया छितु छितु हरत रहात ॥४॥ सो नहीं घात अप
रत्ता स मजन नतो घर को किल चात ॥ सूरज अ
भकूल वारि रि के गोपिन दें षि लजात ॥५॥८१॥ राग
सारंग ॥ ऊधो हम स्याम को यही पर खो आवे ॥ त
व वह प्रीति चरन जाव क हे अव कुवजा मन भावे
॥१॥ तब हमें जातुल दाव लहै नेह सि हसि के वल गा
वे ॥ अब वह स्त उप नूपुर पा गर हम नयो न दिषा
वे ॥२॥ आमसु घसमी पर नहिन जीउत सो अव
जोग सिषावे ॥ आगु ष अमत पीयो म रिरस
ना सो के सो विष ओव ॥३॥ कर मीडत पछितात
धुनत सिर अम अम भन समुभावे ॥ सूरदास
प्रभु विकल विरह नी तसी विध दुख पावे ॥४॥
८२ ॥ राग सारंग ॥ येहुं संदेस क
ह्यो हे माधो ॥ कर विचार जियसा धव माधो ॥१॥
इडा पिंगला सुखमन के नाडी ॥ सहज सुनत में
वसे मुरारी ॥२॥ अष्ठ आवक सिसव जग रे स्यो

सरं
श्री

भ्र॰ अलष निरंजन नैंन निपेषो ॥४॥ एक चित्त और
२३॥ एक मन लाइके ॥ आंषि मुंदि सुंतर गति ध्याओ
धा ॥ हृदै कमल में जोति प्रकासी ॥ सोई अच्युत अवि
वगति अविनासी ॥५॥ इह उपाव विरहा तुम त
जिहो जोगपंथ क्रम क्रम अनुसरही ॥६॥ यह
मेरे समुझ कहो गुपाल ॥ सुनि विलषी सब व्रज
बाला ॥७॥ रे मधुकर लंपट अन्याई ॥ ए सब वचन
कहे कन्हाई ॥८॥ श्रीवृंदावन में वं[illegible] विराजे नटवर ने
भेष सरस हरि राजे ॥९॥ रासवि[illegible]लास करत देव वि
ना ॥ पचि कित सषा लागे सिर नावन ॥१०॥ भ्रमरगी
त जो हरि कों गावे ॥ परम भक्ति सो हरि कौ पावे ॥११॥
सूर जोग की कथा न भाई ॥ सदा भक्तिजन मो पै आ
ई ॥१२॥१॥ गोपीवचन ॥ राग मारु ॥ [illegible]मन
ति रहित निरस जोग कहा भावे ॥ नितु[illegible]वीन
न सों कहे कहा पावे ॥१॥ जिन नैंन निरषे म[illegible]न
स्याम सुंदर हंसतो ॥ तेई अब मूंदन कैहै कौन सानु
नेरो ॥२॥ जिन के तुम सषा साधु बात कहो तिनकी
सुनि है है प्रेम कथा दासी है जिनकी ॥३॥ निरगुन
अविनासी मति का है को भाषो ॥ सूर स[illegible]जी मन
धन कहो कहां राषो ॥४॥२॥ राग म[illegible]र ॥ हमा
र रे हलधर की लकरी ॥ मन व[illegible] च कर्म नंदनंदन उ २३॥

र यह दृढ कर पकरी ॥१॥ सोवत जागत सपने दिव
स निस कान्ह कान्ह जकरी ॥ सुनत जोग लागत म
न एसे जो करई ककरी ॥ यह ले सूर मेंहां तुम सौं
पौ तिनकों न चकरी ॥३॥३॥ राग सोरठ ॥ ऊ
धो मन न भये दस बीस ॥ एक मन हुतो सो गयो
स्याम संग को अवराधे ईस ॥१॥ इंद्री सकल सि
थल भयी बिनु जो देही बिनु सीस ॥ आसा लो
गि रही तन स्वासा जो बहु कोटि बरीस ॥२॥ ऊधो
जो तुमहि आये हो देषन कों करि सीस ॥ सूर ह
मारे नंदनंदन बिनु और नहीं कोई ईस ॥३॥४॥
राग नट ॥ मधुकर स्याम हमारे ईस ॥ तिन को
ध्यान धरत निसवासर और न भजिहे सीस ॥
१॥ जिन कों जाय जोग उपदेसो तिनके मन दस
बीस ॥ एके मन एके वह मूरति चितवत नचित दि
न तीस ॥२॥ कहे निर्गुन ग्यान आपनो जित
कीत डारत सीस ॥ सूरदास प्रभु नंदनंदन बि
नु और न हमरी रीस ॥३॥५॥ राग सारग ॥ य
ह्यांके कुल गोपाल उपासी ॥ जोगाइक निर्गुन के
उह बसो सब बसत ईस पुर कासी ॥१॥ यद्यपि हरि
हम तजी अनाथ करत यपि रहत चरन रस रा
सी ॥ अपुनी सीतलता नहीं छाडियत मयपि

प० बिधु भयो दाहु गिरासी ॥ ५ ॥ कहि अपराध जो
३४॥ ग लिखि पठयो प्रेम भजन कों भयेउ पासी ॥ सूर
दास रसी को बिरह निमागन मुनि छाडि गुने स
सी ॥ ३ ॥ ९६ ॥ राग सारंग ॥ अहि मन माधव न चोर
ग कौ ॥ अब कैसें सुरझै सुनि ऊधौ तिरछौ है मो
अ ज्यो ॥ १ ॥ यद्यपि बहुत सो राखौ नेंन न कैसें मा
न छाड्यो ॥ उहै अब जादव सुत कहियत हैं मैंन ल
सु गत बदले ॥ २ ॥ कोऊ कहै देव देवकी कहियत फे म्ना
ने को बूझै ॥ सूर हमारे नंदनंदन बिनु रह्यो और
न सूझै ॥ ३ ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ मेरे जीय एसी
आय बनी ॥ छाडि गुपाल और जो सेऊ तो लाजे
जननी ॥ १ ॥ कीजे कहा काच को मानि पाछ
को लमनी ॥ बिष को मेरु कहा ले कीजे अंम्रत
ककनी ॥ २ ॥ मन बच कर्म यहै ब्रत मेरे चातक
म तसरनी ॥ सूरदास प्रभु रसन ऐ कासन जी
आन प्रभु नी ॥ ३ ॥ ९८ ॥ राग सोरठि ॥ ऊद्धव ना
हम बिरह बना तुम दास ॥ कहत सुनत घट या
न रहत है हरि तजि भजो अकास ॥ १ ॥ बिरही मी
न मरत जल छांडै तजि जीवन की आस ॥ चा
तक भावन नहीं तजे तप पे पाव रषत मरत पिया
स ॥ २ ॥ परम प्रगट प्रीति रद्द य जो पाली पुत्र ३४॥

गये बन बास ॥ सूरस्याम सो दृढ ब्रत राख्यो मेटि ज
गत उपहास ॥ ३ ॥ ९९ ॥ राग सोरठि ॥ ऊधो का प्रेज
की रसा विचारो ॥ ता कौ यह हमि तु अपापुनी जो
ग कथा विस्तारी ॥ १ ॥ जो कम्न न पठये तुम का धो
सो सो बेलि मिय मारी ॥ के ति क बीच बिरह परम
र य जानत है अनंत हो की धो नाही ॥ २ ॥ तुम तो
चतुर सकंध प्रभु के संग सुनि पतनि कर रहत हो
अलवल से अब लब कहा फिर फिर के नग है तिहे
अबहि सुनि ध्यान मनोहर मनोहर मूरति कैसे
बिसरै तुम्हारे ॥ जोग जुक्ति अरु मुक्ति परम पद बा
सुरली पै वारे ॥ ३ ॥ जाके उर में बसत मनोहर त
हां निर्गुन आवे ॥ सूरदास सो भजन बहाऊ मो
हि हरि से भावे ॥ ४ ॥ १०० ॥ राग आसावरी ॥ ऊधो
जोग जोग हम नाही ॥ अबला सार ध्यान कहा जा
नें कैसें ध्यान धराही ॥ १ ॥ तेई नैन मूंदने कहियत
तहां हरि मूरति जिहि माही ॥ ऐसे बचन कपाट की
मधुकर हम पे सुनी न जाही ॥ २ ॥ श्रवन चीर सि
र जटा बढावने ए दुसह है न आही ॥ चंदन तजि
तन भस्म चढावत बिरह अनल अति दाही
॥ ३ ॥ जोगी फिरत जाहि लगि भूले सो तो है अपुन
ही ॥ सूरस्याम न्यारे न हि छिन कहु ज्यों घट ते पर

सू० जाहीं ॥ ४ ॥ ६१ ॥ राग सारंग ॥ हरि हम सों कब ह्वै न
३५ ॥ उदास ॥ रासविलास पियाय अधररस क्यों बिसर २
त ब्रजबास ॥ १ ॥ तुम तो प्रेमकथा को कहिवो मा
न्यो उपहासो ग्राम ॥ वे हरि कहा तान स्वाद जानें कू
कन जानें बागविलास ॥ २ ॥ सूरदास यह ऊद्धव
हम कों भयो तेरहो मास ॥ ३ ॥ ६२ ॥ राग धनाश्री
ऊद्धव तुम हो अति बडभागी ॥ या सही रहत सनेह
ते रचक नाहिं न मति अनुरागी ॥ १ ॥ पुरइन बस
रंजल भीतर ने कहूं बूंद न लागी ॥ सीतन रीसें
पावन बास्यो दृष्टि न रूपरस पागी ॥ २ ॥ सूरदास
अबलामति भोरी गुड चेटी ज्यों पागी ॥ ३ ॥ ६३ ॥
राग धनाश्री ॥ ऊधो मन माने की बात ॥ दाख
छुहारे छाडि अमृतफल विषकीरा विष खा
त ॥ १ ॥ ज्यों चकोर को देहु कपूर कोउ तजि अंगा
र अघात ॥ मधुप करत घर फोर काठ को बंधत
कमल के पात ॥ २ ॥ ज्यों पतंग हित जानि आपु
को दीपक सों लपटात ॥ सूरदास जाकों जासों
हित ताकों सोई सुहात ॥ ३ ॥ ६४ ॥ राग गौरी सम
कत परत निहारी ऊधो ॥ ज्यों चहे भाडु पैहे सेव
लिका गल बोलत बचन सूधो ॥ १ ॥ आपुन कोउ
पचार करे अपनि तब औरन सिष देहु ॥ बेड २५ ॥

देखउ पजोग हे तुम कों मन न सखा मोले है ॥ २ ॥ उ
हा में षन ना ना भो लिन ने कें ओर माधव में वे रहे ॥
हम कों पति रस पलिजि य उपुने यह रस नें चित
षरहे ॥ ३ ॥ सो चीवात न छाडि अलि ते रीहू ठें अव
कें सुनि है ॥ सूरदास प्रभु काइ लित मनें के हें सन्मा
र वे को वरिहे ॥ ४ ॥ ६५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो तुम नि
[illegible] मन सबाई ॥ पालागों इतनी हिर रह ने यो वसु
[illegible] रिति दिठाई ॥ १ ॥ कोने रंक सम परहरइ तनी
[illegible] तस पवने आई ॥ कोने सोने कोउ उलीगिचीरे
[illegible] वाधि बिलाई ॥ २ ॥ धाम धुजाने कोने की
ने कोने धाउ उई ॥ कहि ऊधो कासे तनो रतेर याअं
न उधो रम सई ॥ ३ ॥ ओरन की मा ला गरस पु
ने को न गुहि यच नई ॥ कि हि ऊगर कीत रकी
कीनी कोन न स्यो सुर गाई ॥ ४ ॥ कोऊ वे अपव ना ॥
वें न मूरि दिखे जो अमसाधि लगाई ॥ हरि हि भो र ॥
ओं न रूप देखन की अग नउ ठी अधि काई ॥ ५
सूरदास प्रभु अवतिन कों प्रेमक छ्यो नही माई
॥ ६ ॥ ६६ ॥ राग धनाश्री ॥ रे अलि जिन न ककर म
ने गाई ॥ हम अनुराग न [illegible] पासु मत को
ने कपानन आई ॥ १ ॥ कै से कहि कोव ईन
के से कै लीना ल्यो ॥ कालीहम न कि यो

भा.
२६॥

रिवनकोवरनविहारमो ॥ २ ॥ केहिविधनंदमहो
त्सवकोकोविहिविधकेपोधाई ॥ पदसूषन
कोनाथांविनकेमुवतीमनपहराई ॥ ३ ॥ रधि
माधनमोजनवेहेंभरिंगेपसकलतेआधे
वनकीधातचित्रअंगनकेकरि ॥ नाचतमेय
सुहारे ॥ ४ ॥ महवनकेधूनसुहायस्यामवि
नुतरफतवीततेजांम ॥ छूरसुरतेंविकलवधि
योगिनरटरटमाधोनाम ॥ ५ ॥ १ ॥ उद्धववच
न ॥ राग ऽआसावरी ॥ मेतुमपेब्रजनाथप
ठायो ॥ आतमज्ञानसिखावनआयो ॥ १ ॥ आ
पुहीपुरुषआपुहीनारी ॥ आपुहीवानप्रस्थ
ब्रह्मचारी ॥ २ ॥ आपुहीपिताआपुहीमाता
आपुहीभग्नीआपुहीभ्राता ॥ ३ ॥ आपुहीपं
डितआपुहीज्ञानी आपुहीराजाआपुहीरा
नी ॥ ४ ॥ आपुहीधरतीआपुहीआकास ॥ आ
पुहीस्वामीआपुहीदास ॥ ५ ॥ आपुहीग्वाल
आपुहीगाय ॥ आपुहीआपचरावनजांय
॥ आपुहीभोंरआपुहीफूल ॥ आत्मज्ञा
नाजगभूल ॥ ७ ॥ एवंहमहूजानहीजोय
हीअतुनीरंजनसोय ॥ ८ ॥ यहसमार
मनभागे ॥ नैरामरवनासेभ्रमभागे
२६॥

२ ॥ जोगसमाधिब्रह्मचितलावो ॥ सूरसोपरमा
नंदकोपावो ॥ १० ॥ २ ॥ उद्धववचन ॥ राग ऽआ
सावरी ॥ जोगीहोयसोजोगबखाने ॥ नवधाप्र
क्तिसहरातिमाने ॥ १ ॥ भगभक्तनंदनंदनमेंआलिं
गावे ॥ परमानंदसोकोविचारो ॥ २ ॥ बलिपाक
मिरुचिपटुलमयानी ॥ ऋषिपाहदिकेरसतु
स्पानीसे ॥ पाचरविपानवंध्याजाने ॥ विनु
देखैवैसेमनमानै ॥ ४ ॥ पुनिपुनिवहेवदेसुधि
आवे ॥ अक्षरस्पाविनुऔरनभावे ॥ ५ ॥ नवकि
सोरसिनतेनैनिनिहारी ॥ केरजोगकाछविप
रधारी ॥ ६ ॥ सीसमुकुटकुंडलवनमाला ॥ जो
विसरैवेननविसाला ॥ ७ ॥ मृगमदमलयअप
लपुपरसे ॥ उनमोहनमनहरेहमारे ॥ ८ ॥ अकु
टीकुटिलनासिकाराजै ॥ अपरनेअघधरमुरली
करगाजे ॥ ९ ॥ हरिमदसननतडितदुतसोहे ॥ स
हसुलिलंगनमुबलितमननमोहे ॥ १० ॥ हूंरवि
मुकतकंठनमनिमोती ॥ दूरकरतउरपतिज्यो
कोती ॥ ११ ॥ कंचनकिंकिनीपदकेनिराजे ॥
भ्रातिचालनूपुरअपतिवाजे ॥ १२ ॥ तनसं
नपवित्रअंगकीये ॥ भीवलमाचिनहरिस
हीये ॥ १३ ॥ ऐलवसनछविअरनीकलाइ ॥

म० नवसिख अलि सुंदर कुंवर कन्हाई ॥ १४ ॥ रूपरास
३७॥ ग्वालन के संगी कबहे थे वह ललित त्रभंगी
॥ १५ ॥ जो तुम हित की बात बतावहु ॥ मरसु पावे
ध्यानि मिला वहु ॥ १६ ॥ कानै रूप लिउ पकार
निहारी ॥ सूरसो जीवन मूल हमारी ॥ १७ ॥ १८
उ द्ध व च न ॥ रा ग बि हा ग सो ॥ ताके रूप वर
न यतु नाही ॥ मैं न मूंदि वे लो मन माहो ॥ १ ॥ हदै
कमल मैं जोति विराजे ॥ अनहद नाद निरंतर
बाजे ॥ १ ॥ इंडा पिंडा सुषमना नारी ॥ सहज सु
न मैं बसत मुरारी ॥ ३ ॥ मात पिता नही दारा भा
ई ॥ जल थल व कघट रह्यो समाई ॥ ४ ॥ इह भा
व दुस्तर भवतरिहो ॥ जोग पंथ क्रम क्रम अनु
सरिहो ॥ ५ ॥ सूरसो पहम लि मन मेरो बो ॥ निर
गुन उपाधि ताहि गहि नाषो ॥ ६ ॥ २० ॥ गोपी
व च न ॥ रा ग के दा रो ॥ हमको जे लालतु पा
लउ पासी ॥ ब्रह्मग्यान सुनि क्यो न हासी ॥ १ ॥ थ
नमैं जोग कहा ते लाये ॥ १ ॥ पुरव जो पूब दिमाहि
गयो ॥ २ ॥ स्याम सो हके पाप दिखायो ॥ सो मा
तुम हम पठायो ॥ ३ ॥ हम तो ब्रजनाठ गिरि
हेरी ॥ सो ठगि ठग्यो कंस को चेरी ॥ ४ ॥
राम जन मसी ता अहराई ॥ कंजी सब धूं अवहु

वजा पाई ॥ ५ ॥ न वालि यकै वियोग दुषपायो
अब कुवरी मिलहि यो लिरायो ॥ ६ ॥ नीरस का
न कहा लेकीजे ॥ जोग कोट हासी सिर दीजे ॥ ७ ॥
सूर बेगि उहि जाकुमया वेरे ॥ कहूं तुम्ह लिप रहिहे रहे
संभागे ॥ ८ ॥ १ ॥ ऊधो वचन ॥ परमेश्वर पवगन लि
अब तासी ॥ विधु नरहत भूधरे नरासी ॥ १ ॥ न
हि ताको कोउ राई नकोई ॥ जहा देखे तरू अक्ल हे
सोई ॥ २ ॥ उरमें रूपा नो ब्रहहि जो नो ब्रह्म वि ना
हु जो नहि मानो ॥ ३ ॥ गो पी व च न ॥ उर में छो थ
बे ले ऐलि मैरे ॥ हरि पद पलनैं नक हे ननेरै ॥ १ ॥
के सो वियोगी छिने छिन हीमैं ॥ नंदनंदन नेदेषि
जीमैं ॥ २ ॥ जोग पथ पानो न हि पीवे ॥ जे वह मि
ले तें वसतु पावे ॥ ३ ॥ मो हमूरति कंठ लगा
वे दुस हह वचन लिहेमे न भावे ॥ ४ ॥ जो नहि
छोटे हे के धों विछुमें ॥ सूर भूलन तजि पगत हला
मे ॥ तामें कहा परमपद पामे ॥ ५ ॥ २ ॥ उद्ध व
व च न ॥ मैं को नों मन कों न उपाई ॥ तुम मे दर
स भक्ति निसु पाई ॥ १ ॥ ऊधो कहे धन्य ब्रज ना
जिन के रस बस मदन गुपाला ॥ २ ॥ तुम
गुरु मेरे तुमरो ॥ जोग सुनाय जस
लारो ॥ २ ॥ चरन गीत जो सुने सुनावे ॥ सा

भ० नितु भक्ति गोपिन की पावे ॥४॥ सूरदास गोपी
सू० बडभागी हरि रस रस नउरी नागी ॥५॥ ५ ॥ गो ॥
की बचन ॥ इहां हरि हू मसों कपा करै ॥ सो नि
त कहें ग्वालन सखी ॥१॥ इहां पय पीवत पकौ सं
हारी सकट चनों इहां करि मारी ॥२॥ वत्सा
सुर कों इहां निपात्यो ॥ बघासुर इहां हरि नू
हत्यो ॥३॥ हरि नू मार्यो धेनुक इहां ॥ इहि खि
धो हत्यो प्रलंब तहां ॥४॥ गाय चरावत इहां चला
हरे ॥ क्रोध कीयो हरि सब ले भरे ॥५॥ ले राखे ग
क संवत हरी ॥ तब इहां आय बिध अस्तुत क
री ॥६॥ इहां लक काली उरग निकास्यो ॥ नव
ल गोप जरा तुन अगिनि लखु वल्यो ॥७॥ पर्व गाह
मारे हरि ने हहरि ॥ क हो लीला करहे जे कौ लि लिहरि
हरि हलधर इहां नृत्य मत ॥ हरिजन रूपी जाद
स कीपा पठये ॥८॥ लिन वर हूमो [illegible] हन [illegible] रे रे
पे मय मिल हरि संग [illegible] न [illegible] ॥१०॥
इहां हरि गोवर्द्धन गिरि धार्यो ॥ मघवा रि
वेलि हमे उधार्यो ॥११॥ ॥ सरद निसा मे रा स
[illegible] रो इहां ॥ लो सुख हम पे बरज जात फहां
[illegible] लि ठे भाग कें इहां संघार्यो ॥ भौम
[illegible] र इके सौं इहां व छाल्यो ॥१३॥ इहं हरि बे ३९

लन कंस मिचाई ॥ कहां लौं बरनों कीला गा
ई ॥२४॥ सुनि रूधो मगन आति भयो ॥ सो रत
घर निस्लान सब गयो ॥२५॥ निरखत ब्रजभू
पति सुख पावे ॥ सूरप्रभु गुन पुनि गावे ॥२६॥
॥३॥ उद्धव बचन ॥ राग केदारो ॥ गोपी सु
नो हरि सदेस ॥ गये संग अक्रूर मधुपुरी हत्यो
कंस नरेस ॥ रजक मार्यो चसन पहरे धनु
ष तोस्यो जाय ॥ कुवली या चाणूर मुष्टिक दि
यें धरनि गिराय ॥२॥ मात पितु के बंद छोडे बासु
देव कुमार ॥ राज दीनो उग्रसेन हि चवर निज
कर धार ॥३॥ कहौ तुम कों नंदधाम छाडि बि
खे बिसार ॥ सूर पाती दई लिखि मोहि पठै गो
पसुमार ॥४॥ ॥६॥ गोपी बचन ॥ राग केदारो
इहां तुम कहत कौन की बातें ॥ हे रूधो हम स
मुझत नाहीं फिर पूछत हैं ताते ॥१॥ को नृप भ
यो कंस किन मार्यो को वसुदेव सुत आहि ॥
इहां जसुदा सुत परम मनोहर जीवत हें मुख
चाहि ॥२॥ दिन प्रति जात सुरभि धन बन [illegible]
गोप अरु केस [illegible] ॥ [illegible] सरग नरजनी [illegible]
करत ने नन [illegible] ॥३॥ के पुर न [illegible]
बिनासी कै [illegible] बिरह वेद [illegible] ॥ [illegible]

नेआरकरत होइहांहे नंदकुमार ॥५८॥ राग
३९ न ३ ॥ तुम अपलिष्ठि रषि सिकेहेत बनाई ॥ वि
नुमनुतेंहम पूछतहैं चारकंबोहो लोगाई ॥
१ ॥ बोहोषिलनगर न किये खदन चहि सुफ
लकसुतकेसंग ॥ कहिरजेकेंहतकेनानाप
रषहरें अपुने अंग ॥ २ ॥ कहि कुवलियामल्लंस
हमेकोनअसुरहतनाने ॥ ३ ग्रसेनवसुदेवदे
वकीकिनवेरिनइलेआने ॥ ४ ॥ फरबीकरतप
संसानिसदिन कोनेंधोधपठाए ॥ केहिहतक
सलीबोन गजेरु कोनमधुपुरीधाए ॥ ५ ॥ मा
थेमोरचंदउरगुंजा मुखमुरलीकरगाजे ॥ सु
रसपजमसुदानेंहनमोकुलमाहिविराजे ॥
५ ॥ रागनट ॥ फिरफिरकहाबनावतबातें ॥
प्रातकालउठवेंठें लेतउठुबघरघरमाखन
चाठ ॥ १ ॥ सिनकीबालककहतेतोमेंहमसोन
हिहमसोंचे हरि ॥ २ ॥ हेनिकाजसुतकेंनंहन
देमतमाखनाहरि ॥ २ ॥ बालकसंगलियेंवंध
धरलेखातबकातनेंउठलत ॥ सूरसीसनी
चाखतलेंअपवंधोंनाहिनवोलत ॥ ६ ॥
रांग ॥ मधुकरकोनमधुवनग
हेंमंदेसोलातविनासिषपत्रह ३९ ॥

यो ॥ १ ॥ कोवसुदेवदेवकीनंदनजदुकुलवंस
उजारोर ॥ उनसोंइहांपइ चोनचकाइफिरसे
जाहिकागर ॥ ४ ॥ गोपीआपनीधिकासवेसेनेंस
मतकुमरकन्हाई ॥ दिनपतिलेतराजप्रेदाव
नहेंनी मीलचलाई ॥ ५ ॥ कहनहोतुमचतुरस
कोनेकहतलाल कीलोरें ॥ सूरकहतकाहूमद
[illegible]नेंवरहठोर ॥ ४ ॥ २० ॥ रागधनाश्री ॥
कमोनें कहिकपाराउधरें हरित्योंहीतुमेंजना
ऊमोवनगहे तुमवेठेरहिकोहेमुरलीमाटसु
नाइ ॥ १ ॥ अबहिलिंधरेवनगोचारनहोवेठोन
सुगावन ॥ सुआवनश्रीरामकेसंगनाचतम
भुहेंदिषाइ ॥ २ ॥ कोजोवेंदुविधाकेकोचवसत
मदुरविकटनेंआवे ॥ अबयहदुषवउपालि
हासतनमषिनप्रोंचधुउवे ॥ अंधिनेनेंहलासन
रहें यहांविनुजोकोउकोटसिबावे ॥ सूरदास
जोमनवेंतेमनलागनेंतजहूनहीधावे ॥ ४
दुवचन ॥ रागसारंग ॥ मेध
हारी ॥ जिनकेसंगमरोंजीदते
जी ॥ १ ॥ सिनहूकेघरमोर
हनी ॥ किनहूके
भकहानी ॥

सू० दैरसु नावत ॥ सूरदास मैं रैं वलि वलि चरन कमी
५०॥ पह सुष मोहि भावत ॥३॥१२॥ राग सारंग ॥ हो
इन मोरन की वलिहारी ॥ तिन की सुभग चंद्रिका
मां परत जे वेईं वधारी ॥१॥ वलिहारी वा वांस वं
स की वंसी सी सकुमारी ॥ सदा ओर रहत है कर
जो स्याम के नेक हू होत न न्यारी ॥२॥ वलिहारी
वा गुंजा की तु पजी जगउ जन वारी ॥ सुंदररर दरहे
जो मोहन के कवहू टरत न टारी ॥३॥ वलिहारी
कुलैसैल सुसरिता नहिक हत कलिंदहु आरी ॥४
निसदिन स्याम संग आलिंगन पा पुहो भई का
री ॥४॥ वलिहारी वृंदावन भूमि की सो को भाग
मारी ॥ सूरदास प्रभु नागे पायन दिन प्रति गैया
चारी ॥५॥१३॥ गोपी वचन ॥ राग नट ॥ प्रभु
कुरजिन मधुवन तन देषो ॥ कहु वलि हेम आलो
इहार हिके जन्म सुफल करि लेषो ॥१॥ कहां नाथ
हो विनरस रज अकाज जै गोवाल ॥ वालकु
हारे घर घर माषन षात ॥२॥ तु
त निरंतर निगम वषानत वि
म नोहर हूहैकें नमतीत
न कहि कं सुनिय
गो करें संग लेगे ५०॥

धन अंद घरावत ॥६॥ ऊद्धो वचन ॥ ऊधव तो चम्रो
न मधो मन मेरो ॥ आयो हो निरगुन उपदेस नजम योस
गुन को चेरो ॥१॥ जो मैं कह्यो सान गो लाको तुम नहि
राख्यो नेरो ॥ अति हिसान कधु कहत नप्यारे हूते
भयो हरिके रो ॥२॥ निजन न करम मानो रि पपुनो
करिहि जने वसनेरो ॥ सूर मधुप उठि चल्यो म
थुरी लेउ जोग कोउ देरो ॥३॥ जसोदा वचन ॥ मारू
न ॥ कहियो जसुमति की आसीस ॥ जहां रहो तहां न
नंदलाल लाडिलो जीवो कोटि वरीस ॥१॥ मुरस
लीहरहेह नी माषन दुधो घर लई सीस ॥ यह लो
चन यही सुरभी को जो व्या गो जगदीस ॥२॥ कधो
वलल सषा मिलें आये ग्वाल वाल दस बीस ॥ अव
षकें गोकुल कों फेर वसा वो सूरदास के ईस ॥३॥
१६॥ गोपी वचन ॥ राग विहाग ॥ ऊधव जो जो
सुरत करत नहीं रहि यो ॥ उद्धव ऐत नो स्या
र सोसम यपाय के कहियो ॥१॥ यो सन
कह मारी नाहि न जिय में गहियो
दीनह मउन बिनु लोग यह मा
दीजे रसलन भाउ बो
है वो ॥३॥१७॥ रा
स्पावो ॥ भज

४० सेयो ॥१॥ इहांतेमाइविलंवकरोजिनहमरीइसा
४१॥ सुनाइयो ॥ कहियोमाधवसोंहाजननीमनोभुवं
गनसासो ॥२॥ धूरतनहींमानकोउपटकेकठिन
प्रेमकीफांसी ॥ आवतनेंनहिंनेरमंदिरमेंनयो
रहतवनवासी ॥३॥ परममलीनहीनइपतिदुर्वल
स्यामविरहकेत्रासी ॥ गोपीग्वालसखावालकल
वकइहंनसुनिपतहांसी ॥४॥ काहेदीयोस्नुरसुख
मेंदुखकेपटीउपतिविस्वासी ॥५॥ ॥राग सारं
ग ॥ निहारीभीतिकीधोतरवार ॥ द्रष्टिधारहर
हतोमुपहलैंआयखवसवम्रजनारि ॥१॥ परीसुम
रिछेनप्रेंसवनेरनहूंनमानीहार ॥ व्याकुलविकल
संभारछिनछिनवहनसुधानिधिनार ॥ नव
वहइकपाउपवजोगपठयोमनमथलज्योंकुहार
रसमअभूरहोतनक्रजियमोजिनउरसार
ग के ह रो ॥ लोचनचकीचाहु
पीपचपावसरफोउपासामअमक
परितासिंधुउपेनेकउकोरपनेही
वनलजहुरायजलधिविनु
मेंनहीरवनअजह
बाजायवको
गो पी ३ ॥

२

ध

वर

षेमलितभर ॥ उद्धवकोउपदेससुनोकिनकां
नदे ॥ गोपिनकेमनस्यामसोईपानदे ॥१॥ कोइ
आयोयहसंतेजहांवेदसुखनसिधारे ॥ तनध
नवेसोईसाजरूपवेसोईधारे ॥२॥ वहवेणुधन
काजितिलकउधिमाथेंकीनी ॥ कंचनकलसमम
गलउरारजकोमारीनी ॥३॥ मोपभीरउपागन
मइमिलवैठीसवजान ॥ नेनखरुरीउपागेंधरी
पूतरिहरिकुसलान ॥४॥ कुसलकुसलअक्रूरकु
सनउधोकुवजारु ॥ कुसलछेवसुदेवदेवकीव
लदाउ ॥५॥ पूछेकुसलगोपालकीरहीसवेगहि
पाय ॥ प्रेममगनउधोभएहेखतव्रजकोभाय
॥ मनमधकहतनसीनपूछीयेगोपालहि ॥६
व्रजसोंहेतविसारिजोगलिषवतमधुवनमेंवाल
हि ॥७॥ पातीवांनेउपावहिनेनानिरहेनलपूरि
देखदेमजोपीनकोआनगनेगयोमूलि ॥८॥
इतउतचितवनीरनेननिरखेसाध्यो ॥ ठा
धोधरोसवधोसवोध्यो ॥१॥
नगावहिनरोनपावतपार ॥ से
काछाडेविषयविजय
रहीनीचीवरनारी
ज्योजानारी ॥

भ०
४२॥

नुगनिकीरीति ॥ नंदनंदनकों ध्यानुकें जो
लिखभूजो भीति ॥२२॥ कहि निरंजन नाम
का हरी जैसवकोई ॥ एकै रूप तें अपार एक
हि रूप वगनि है सोई २३ ॥ नैंन नासिका अग्र
है तहां ब्रह्मकोवासु ॥ अविनासी विनसैनहीं
सहज जोति परकास ॥२४॥ जो लो पहकरत
ही सोई है जे कहै कोकुबलवाध्यो ॥ तवे विला
ये गोरहले कहैत तोरे वेन ॥ ऊधौ ताको न्याव
है आपन सूरै नैंन ॥२५॥ माया नितत्व का धार
ताहि होइ सोचन जैसे ॥ सो नीनैं नेऊ नेतता
हि सुकृत तन नहीं कैसें ॥२६॥ सूक्ष्म निगम बुला
य कैं कहे बात समुझाय ॥ आदि हि रूप तें नहि लो
भियै कैं न पिना को भाय ॥ ऊधौ कहत सुनी
सो रचोर कहौ मन न कीहि लगावे ॥ प्रभु नीको
र हरे कहौ को चोर बुझावे ॥ सूर सजोर
हमैं लिखावत जोग ॥ हम सो नीके
नीके धोलोग ॥२८॥ कहे ऊधौ स
रे सुखसों चे पहरे हूं जियेल
मारी सो तुमै जो गन
प्रेम नेपारहे पो
थले ये ॥२९॥

पु

सो आपर आपे मग जो ओष न तुलित रसाल ॥ रस
निधि कहि प्रेम सों न वे मिले गोपाल ॥२२॥ सुनि
गोपिन को प्रेम म्यान उर्द्धकों भूल्यो ॥ गावत गुन
गोपाल फिरत कुंजन वमें फूल्यो ॥२३॥ छिन गोपि
नके पगपरे धनि धनि तुमारो नेम ॥ धन्य सवेतु
म गोपिका सकलै ऊंचो प्रेम ॥२४॥ धन्य को पी धन्य
ग्वाल धन्य ये सब ब्रज की बाली ॥ धनि यह पाव
न भूमि जहां विलसे अविनासी ॥२५॥ उपदेस देन आ
यो तुमै मो को भयो उपदेस ॥ ऊधौ जदुपति पठयो
कि यो गोपको भेस ॥२६॥ भूल्यो जदुपति नाम कं
ह्यो गोपाल गुसांई ॥ एकै वेर ब्रजमा यहहु गोपिन दि
षाई ॥२७॥ अंग हां वन सुख छाड़ि कैं कहां वैसे हो आय
कृपा वंत हरि जानिकें उद्धव पकरे पाय ॥२८॥ प्रभु
ब्रज को प्रेम कहू छु हो न गई ॥ उमग्यो नैंन नन नी
र कहै न कहे तक धूवन आई ॥२८॥ सूर स्या
म भूतल परर हो नैंन न मल छाय ॥ यो छ
पीत सों भले काये जोगसिखाय ॥
श्री ॥ अब मैं यहां ते गयो ॥ नघम
यो जन न पागे है लुल ये
ग्राम रस बहिन लो
धो मे या कहा ते

त

श्री
४३॥

छतलेलेतुमरोनाम॥ मानोरुक्लिलागोत्रषतनच
नकज्योंभक्षकसवालिराम॥३॥ सुंदरपरमवि
चित्रमनोहरयहमुरलीहैबाली॥ लईछिड़ा
यसुबमोनपूरमभूप्रीतिस्थानिउरसाली॥
४॥३०॥ राग केदारो॥ माधोजुसुनोब्रजकौनै
म॥ सोधिमेंषटमासकहेरह्योगोपिकनकौप्रेम
१॥ हृदयतेंनहींटरतटारेस्यामरामसमेंत॥
रूपसमसलिलमबाहमानोंरूपनिनैननिरंत
२॥ ओररूपतुलकसकुचिपरवानघत्रपटा
य॥ सुमरिसुमरिप्रगटलीलाकर्मउलगो
पाय॥३॥ देहगेहसमेतअर्पनकमललोच
नधान॥ सूरउनकेप्रेमदेखेफीकेलागतग्या
न॥३१॥ राग केदारो॥ सबैब्रजघरघरएकै
रीति॥ ज्योंकुरुसेनधरेधनश्यामतनयोद्रुमतु
पीति॥१॥ तेसीपरमसयानीरतनकु
त॥ बचनयोगसुनतस्यामकुंतनमई
गीत॥२॥ एकेधरतनगहीउनर
करी॥ गोपीसेषनिजरूपउघ
४॥ राग सारंग॥ मा
नेरोकछोपबतजो
॥१॥ एकबालगो

सुतहोयरेंकतनएकलकुटिकरलीनेतन॥१॥ एकग्वालिन
टबरसपुलीलाएककर्मगुनगावत॥ वोहोतभांतिक
रिमेसुकुरईनेंकनउरमेंआवत॥३॥ निसवासरहित
रहतएकटकछिनछिनुनवनवप्रीति॥ सूरसबेरूपर
फीकेलागतदेखेंबहुरसरीत॥४॥३५॥ राग नटा
कहित्रारतहरिजापरब्रजकोरीति॥ पथीद्रुमबे
लीहरसनकोअकुलात॥१॥ अबतुमहेत
नकलनेतनहोअबनहींपोहेपनपात॥ कीउ
कपोलकुलाहलकरतनहींउठिमात॥२॥ गो
रसनिकसिबनायनेनसुखआतिदुखरेंननहींबा
त॥ गोपीग्वालउसासहुलासविरहज्वालअकु
लात॥३॥ गोकुलकीहोविपतिकहाकहोंतुमबि
नुहेजमात॥ सूरदासस्वामीदरसनबिनुकरत
सुरतहिमरात॥४॥३६॥ राग विहाग॥ हरिरूपाये
लोभकीकीनी॥ मोहेदेषतकेवेरराधिकास्यामक
सरभरी॥१॥ तननेरूपनिकंषविरहरूपतिस्या
लतुरधकधककौदेषबहुकीनो॥ चरनचरन
रिगिहूगिरिखिरसलिलभईभी
अपूरीषयारवलकरि डी
कीपरनपरेबायाहोरे
तहहेभांतिउफोर

सू०
५५

री।।सूरदासप्रभुतुम्हरेदरसबिनुनिसदिनरहतदुषी
हीन।।५२।।रागमलार।।सुनौस्यामयहबातऔरको
उक्योंसमुझायकहै।।दुहुँदिसकीरतिबिरहबिर
हनीकैसेंकहिजोसहै।।१।।जबराधातबहीमुषमाधौर
टतरहै।।जबमाधवह्वैजातसकलतनराधाबिरहे
दहै।।२।।उभयअग्रदवदारुकीटज्योंसीतलताहिचहै।
गहलैंजानिअगम्यचंदननसीसलोहोनमहै।।३।।स
माचारतातेसौरकेपाछेंकौनकहै।।सूरदासप्रभुये
बिकलबिरहनीकैसैंकैसुखनलहै।।५३।।रागके
दारौ।।देषेमैंजोबनचुंबतअक्षत।।मनोकमलद
लिआसहदकसोमुकतागनिगनिदेत।।१।।कबहूंकनकक
हूंगिरीमुहिकाकबहूंतोडिकबहूंनेत।।चेतनतनहीहि
चकीपुतरीसमुझाईसोचेत।।२।।द्वारेषरीकि
मनजोबनउठिस्वासनलेत।।सूरदासप्रभु
नहीतनकीबधौनिहारेहेत।।५४।।रागधन
भरतबिरहैअंगनाराधिकानैननीरभरे
मानविषैषफूलदोहुलतेमानचंपकौ
बिनदरसनओकीजे।।प्रेमस
ो सूरसोकपिगहिलीजे।।२
तिमिलीनमषसानहु
दरपतरनहिलो

६

लषेनधुवावनमारी।।१।।उपजिमुषरहतअनंत
नोचतबलगएजैसेंषकितजुवारी।।दूबेसि
कुरवदनकुमलानोजोनलिनीहिमकरकीमारी
।।२।।सुनिसंदेसननसहिसकेमृतकनईएकसंदेस
दूजेंपलिजारी।।सूरदासकैसैंकहिजीवेप्रेमब
ताहेवामदुलारी।।३।।५६।।रागबिहागरो।।सुनि
हैसुनौस्यामप्रबीन।।हरितुमारेबिरहराधामैंजो
देषीछीन।।१।।तज्योतेलतमोलभूषनअंगब
सनमलीन।।कंकनाकरिरहितनाहिंनताडिभुज
बलहीन।।२।।कहिनेलाजसंदेससुंदरिगमनमो
तनकीन।।छुटीछुद्रावलीचरननउरझीगिरबलत्यौं
हीन।।३।।नैननिभरिभरिसजलसषीनेदषिहूं
छीपाधीन।।कंठबचननबोलआवेहृदयपर
सतमीन।।४।।फेरउठीसंभारभरजीपरअमाहस
हीन।।सूरहरिकेंरसकारनरहीआसालीन।।५७।।धर
रागकेदारो।।भरिभरिलेतद्रगचेस्वास।।सामरे
प्रेमनाथतुमबिनुदुषितमनसिजत्रास।।१
धिकपीरअधीरडोलतसुमिरगुनसम
ईमुषभएदुषदाननिमि तीयेम
मगरजनजौगउरन
तुमबिनुबिपतसि

५० ॥ धरु ॥ राग केदारो ॥ भरि भरि लेत लोचन नीर ॥
४५॥ तुम बिना ब्रजनाथ बिरह निरुपधि क बिकल सरी
र ॥१॥ कमल लेते उरस आन राधल छिब कचंद नीर ॥
जाय मगन सिकिर नरो कत मयं दसरीर ॥२॥ हो
इहां तुम पाम सुपायो देष मन सिजबीर ॥ सूरस्याम
सुजान मिलवें मेटि मन्नम घ पीर ॥३॥४४॥ राग सो
रठ ॥ माधो जू जोग फे बोढलयो ॥ स्याम सुष बुधि
२ वचन सुधो सनुन्यो सो कछूक ह्यो ॥१॥ नवन नवमा
षल रंग मनो इर्द घस की लोचन उमह्यो ॥ तुम जोक
ह्यो सगीला को पानी है जो वह्यो ॥ सकल संग
रहयर रसमर्व सु ब्रजबनिता निलह्यो ॥ धा छे भा
उपस्यो नपावे लिषतुम दयो मह्यो ॥३॥ को हि हल
का स्मर्न अपनि कृपा रत तुम पे के से मानत रहो ॥ सू
रस्याम सुनि सघाव वचन नव लग है मुख जो कग
हो ॥४॥४५॥ राग केदारो ॥ कहां मैर हि बज
की बात ॥ सुनो स्याम वम बिनु मैं जन नेके बे से
बिहात ॥१॥ गोपी ग्वाल गाय सुत सब मि
कसि गात ॥ परमि तन नो छिन सलिर
सो अं बिनु पान ॥२॥ जो कोउ
लल पय तत ॥ चल
छत तकु मा लात ॥ ४५

पिक चात्रक बन बसन न पावत बयस बलन हि बा
त ॥ सूरदास संदेसनके दुष पथिक न बहु मग जात ॥
४॥४६॥ राग केदारो ॥ हरि तुम नैं वचन सुजान कि
रह व्याकुल छीन तन मन थकित लोचन जां न ॥ यह
संदेस ब्रज के नाथ सुं सो किर मान ॥ मैं सदेस ज दीने दे
ष्यो लव बिनो कान ॥१॥ तुम बिन से भान हि ब
मिन भान ॥ तन सम तुला सघट
मान ॥३॥ जगत जीवन अमृत पान
लत ॥ करि मेन तन कछु सुर के प्रभू
मिवे प्रम मान ॥४॥४७॥ राग नट ॥ ब्रज जन न दुखित
लित न छीन ॥ बदन ए कटक चितै चाचेक स्याम
घन तन लीन ॥१॥ नाहि फलट तव सन सूषन दुग
नहीं पकलात ॥ बिलख बदन मलीन तन अति
मरुन जल जात ॥२॥ कहि न जो तुम कहि अति
मति पहो कहि उपदेस ॥ चन छुटी जल बूंद रसक
न व च न उरन घ बेस ॥३॥ धरें मुरली मोरचंद्रिका
पीतबसन नव बनमाल ॥ रे षि वह छवि गु
निल पट स्याम तनमाल ॥४॥ हि व स का न
मिलवें कहू लगु न वलवीर ॥ रेन
तल फल गीन जो बिन नी
सू करोगि जो उन

भ॰
४६

कैसेहु मरत नजिकाय ई ॥४८॥ राग सारंग ॥ उन
मैं पांच दिना जो बसिये ॥ नाथ तुम्हारी सौं हू करत
हौं जो हो रि अपन पौ कसिये ॥१॥ बहु बिनोद बहु ली
ला रचना है वै ही घन नहुं आवे ॥ सो कहूं कहा जो होय॥
रा खे सुख बड भागी सोई पावे ॥२॥ मन सा बा चा ॥
हे और कमे ऊ हौं ने कहूं तन च धुकाबो ॥ सूर का ठि
डाल्यो या ब्रज ले रहां दूध माहिं जो माखी ॥३॥ ४९
रा ग सो र ठि ॥ ऊधो जू कहा कहूं उनकी गति ॥ देख
त बनन कहत नहिं आवे प्रेम सरस तुम तन न अति
१॥ यद्यपि हो षट अक्षर ह्यो उहां नेकन लई उर
रंगलि ॥ फल सो कहो तुम्हें तिनको ऊ सब हिम
कौ लके मति ॥२॥ तुम सक पाल करत गमय बहि
घतला सों हों तुम कहत हुति ॥ सूरदास प्रभु तुम के
उपकारी जे जासो तुम पायो पाति ॥३॥ ५०॥ राग के
दारो ॥ हरि जू वह मुख सिर मोर पंखो वा पर गुंज
न के हार ॥ आगे धेनु रेनु तन मंडित तिरछी चि
न चारु ॥१॥ सांझि दिवस सब सषा संग ली
त रे लाल बाल ॥ सूरदास प्रभु मो मन
नस कन नेकहु बात ॥२॥ ५१ ॥ रा
रु लम्फे ऊपाले ॥ तो कित
हिं स्पषि क यह स

ले ॥१॥ ग हो बिरह की ज्वाला जरी न हितकरि सुद्धि ॥
ब्रज रेलो ॥ मोसों बातन कहो सनमुष है कहा स्वव ॥
निलन पेषो ॥२॥ निगम कहत बस होत न कलिके ॥
सोऊ तो नहिं कीनी ॥ सूर उसास छांडि हा हा ब्रजन
ल मुसि यों चरि लीनो ॥३॥ ५२ ॥ श्री मघ बा कप
रा ग सो र ठि ॥ ऊधो भलो ज्ञान समुझायो ॥ तुम्हे
सो अब कहा कहत हो कहिके कहा पठायो ॥१॥ को
हि बाल हो बडे सयाने उहां कछु कहत न आयो
सूरदास ब्रजवासिन को हित हरि हिय मांहि दुरा
यो ॥२॥ ५३ ॥ उद्धव वचन का ॥ राग सोरठि ॥ ब्रज
कै निकट आय पथिक दिखायो ॥ गोपिन के नैन नीर
सरिता के पार न पौहों च सपायो ॥१॥ तुम सरीसो ष
सा षा चवेदके वाहत पारगयो ॥ ज्ञान ध्यान जप
नेम जोग के संग पहिचार लयो ॥२॥ यह तदतें च
लि जात नैं तु उन बिरह पटह के कें फिर तोरी ॥ हे
हूं धूरि उड खांवो वा गहरे के तिक धुन की बाई ॥३॥ ५४ ॥
जो तो वह मोग मधुपुरी कहा धांग यो गुसांई जो
नेत हुतो या ह वाजन की ओर लगे के ते तीर ॥ ध
सूर के या गुन कहा कहा उनकी पत्यो प्रेम
र ॥४॥ ५५ ॥ रा ग सो र ठि ॥ सुनो सो दयाल
गुन गाऊं सुव लिने मो

भृ० कहत नहो दुख पाऊं ॥१॥ होंरे कहा न कहूं हो निरगुन को
४७। ताहूं मैं पूछ टकाऊं ॥ के उमहे वासिधु के नेत्र जो कहे वहूं
याहू ने पाऊं ॥२॥ कोन कोन जो उ सरहे ऊ मे ताते म
जो प्रगटाऊं ॥ मेरे सिर पारी पारत में कुं पाका हिदा
ऊं ॥३॥ एक अंधरो हिय को फूटो दोर बडाऊं ॥ सू
रदास सब बदरसन होवा रिवडी जु पटाऊं ॥४॥४४॥
में समुझाई प्रतिध्रुनो सो ॥ तथापि उने प्रतीत
न उपजी सब लक्ष्यो समुनो ॥१॥ कहो तुम्हारी सबे
बवानी अरु रक्ही होंक धुरप नी ॥ अवननि व
चन सुत भई तसें ज्यो घृत ना रूपगनी ॥२॥ देख
नउन को प्रेम दृढा कों धस्यो रह्यो सब उस्यो ॥ सूर
स्याम होर ह्यो यको भ्रम ज्यो मचो करी भूल्यो ॥३॥
४६॥ राग सारंग ॥ कोउ सुने तन बात स करी
माने कहा जोग जा द्रव्य पति प्रगट प्रेम भज जा
१॥ कोउ कहत हरि गये कुंज वन सेन धाम वह र
त ॥ कोउ कहत वरे द्रवर वत है गोवर्द्धन की रले न
२॥ कोउ कहत नागलीला सुनि हरि गये जमुना
तीर ॥ कोउ कहत गये मधुपुर श्मार वलीये
संग लेवीर ॥३॥ कोउ कहत ग्वाल बालन सं
ते बन लुकाने ॥ सूर सुमरि गुन नाथ तु
म्हारे मोहन मोहे ॥४॥४७॥ राग नट ॥

~~मै भ्रमं~~ हरि कों दरप दांव देहार्यो ॥ रूपा गात्र चे
ग होय यो मे पेव चन निहारो वास्यो ॥१॥ हारि मां
न उठि चल्यो ही न हैमा न रूपगुन न खेद ॥ जानि
लीयो पोर मे यो हो तो प्रेम न रोके वेद ॥२॥ उत्तर को
ऊ उत्तर वहा वत नु वउ नहीं मिलत गात ॥ मेरी बालक
हा उन आगे सुन बचन न विधु मात ॥३॥ अपुनो रो
य जान मन नेमे चल्यो वसो ठो तोर ॥ सूर एक कहे प
ग न लगो मेंहे कीर टक रोर ॥४॥४८॥ राग केदारो
मे जन उहा सिको तुम भयो ॥ परिगयो उनके प्रेम को
स मै तुम हा कित रिगयो ॥१॥ तुमसो सत्य कहि गके
हां वेगि हरि गयो पावन ॥ देखन उनही हे रहो
ल्यो तु ह्याहू मिल न पावे ॥२॥ समुझ परी सब मा
नवीनें यह हि चार न हि लख्यो ॥ सूर स्रवन के हि
रदे गोपिन को अवनन में रउ हि भाख्यो ॥३॥४९॥ रा
ग सारंग ॥ वनमे विरही लोग सिचारे ॥ चितागो पा
लउ गये से रोस तन प्रीति दुर्लभ तन फारे ॥१॥ नंद जी
कोर भाग गो वत निसदिन सांझ सबारे चहु दि
स को हेरू हे रकहि टेरत ईसुख हलपना रे ॥२॥
गोपी ग्वाल सब बासन गैया प्रतिह्री रीन हुस
रे ॥ सूरदास प्रभु विन सब दीखत चंदृष्टि न
तारे ॥४॥५०॥ राग सारंग ॥ हरि सह हिम चौप

गोपाल ॥ ग्वालन की अवसेर मिठाई मिसि कौ भ्रा
वने ग्वाल ॥ १ ॥ नाचत नहीं मोर ता हि नैंतेरटत
न वर साक़ाल ॥ मृग दृग टेर तुम रे रसविंतुसु
नते वे गारसाल ॥ २ ॥ ब्रें दावन हरयो हो तन भाव
त देख्यो स्याम तमाल ॥ सूरदास मैं पाइ जनाय
हे घरस्व लिये नंदलाल ॥ ३ ॥ ४७ ॥ श्री मुष वचन
राग धनाश्री ॥ ऊधो मोहि हरि विसरत नांहि ॥ वृं
दावन गोकुल वन उपवन सघन कुंज की छांह ॥ १ ॥
प्रात समैं मात जसुमति अरु नंद देषसुष पा
वत ॥ माषन रोटी दह्यौ सजायौ अतिहित सौं
मोषवावत ॥ २ ॥ गोपी ग्वाल बाल संग खेलत स
व दिन हसत सिरात ॥ सूरदास धनि धनि ब्रजवा
सी जिनसौं हितजदुनाथ ॥ ३ ॥ ४८ ॥ राग बिलाग ॥
जे जन ऊधो मोहि न विसारे तांहि न विसारों एक
घरी ॥ मेटौं जन्म जन्म के संकट मे राषौं सुष आनंद भ
री ॥ १ ॥ जो मोहि भजे ता भजौं मैं ताकौं यह व्रत म
तमो पाय परी ॥ सदा सहाय करौ या जन कौ गुप्त
हतौ सो प्रगट करी ॥ २ ॥ ज्यौं भारथ भारह्यौ केंप
र राषली यो गज घंट वरी ॥ सूरदास गायदेरा ॥
कौ निसवासर जो जपत हरी ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ ४९
जन ना कौ नेह सभा स्यौ ॥ ऊनि ऊधो मैं ॥

गहर न कीनी जाको नहि धिन संकट टास्यो ॥ १
खंभ फार हिरनाकुस पास्यो जन नेह प्रह्लाद उबा
स्यो ॥ द्रोपदि हिर सुनत सुपति अतुर हुःशासन के
गर्भ प्रहास्यो ॥ २ ॥ ग्राह ग्रसत गजराज सदेर तसु
नि षगपति छांड चक करि मास्यो ॥ ते सो विरद
नु गा ॥ प्रभु के सुन अब ही न मन न दृढ करि धास्यो
॥ ३ ॥ ४९ ॥ इति श्री भ्रमरगीत के पद संपूरणम्
लिषतं श्री गोकुलजी मध्ये लिषिया स्याम न ॥
लके भगवद्दास्य र कावे सव में उजी
तपामेय श्री अंजल ॥ मिती आवण वदी
६ भ्रद स्वत वार सम्वत १६४२ ॥ यह पुस्त
क नारायण काबे सब की भेट वाकरे सो राज
पंच नमें दूठे ॥

Brihanmandiradhishwar
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Agyanuvarti Go Gokulnath